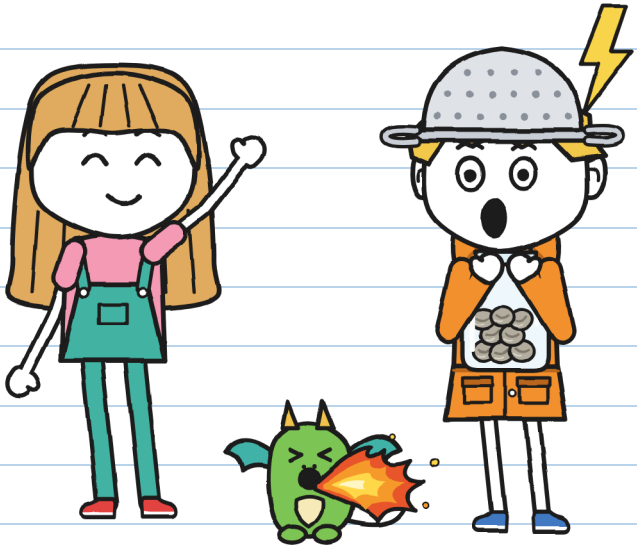
नामुमकिन डिलीवरी · 2

बादल गरजने से पहले न खोलें

Lui Eriksson



(गुनी की डायरी)

साइज़ S
शुरुआती स्तर · 7+

नामुमकिन डिलीवरी · 2
बादल गरजने से पहले न खोलें

लेखन और चित्र: Lui Eriksson

साइज़ S · शुरुआती स्तर · 7+

हिन्दी संस्करण: LinguAula

पहला संस्करण: 2026

© 2026 Lui Eriksson · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

सीरीज़ की दूसरी किताब। पहली: "यह पार्सल काटता है"।

LinguAula

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी गरज को चोट नहीं पहुँची। –ज.



और किसी और की नहीं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो बादल गरजने से पहले मत खोलना।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: तुम इसे मत करना। अगर वह कई पन्नों तक चले, तो "यहाँ से" और "यहाँ तक" लिखा होता है। असली तूफ़ान हो, तो पेज 76 देखो। –ज.

कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। तूफ़ान का शिकारी (कुछ-कुछ)। यह डायरी उसी की है।



जूलिता। बिजली चमकने और बादल गरजने के बीच के सेकंड गिनती है। हरे रंग से लिखती है और "ज." से दस्तख़त करती है।



चूरा। ड्रैगन की बच्ची। गुनी की हर बात की नक़ल उतारती है। हर बात की।



टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त।



फ़्लोरा। नहर वाली सड़क, १ की बाग़बान। पत्थरों के लिए दस्तख़त नहीं करतीं।



वेरा। ड्रैगनों के घर में ड्रैगनों की देखभाल करती है, जो फ़्लोरा के घर के बग़ल में है। चूरा उन्हीं के साथ रहती है।



मारा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।



R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।

डिलीवरी डायरी 2
गुनी की

ऑफ़िशियल।

"ऑफ़िशियल": इसे पहले मैं पढ़ूँगी। ऑफ़िशियली। –ज.



डायरी नंबर 1 ख़त्म हो गई: वह भर गई है। यह नई डायरी मुझे मारा ने दी, जो दुकान की मालकिन हैं। इस पर दुकान की मुहर लगी है। वे कहती हैं कि ऑफ़िशियल डायरी में चित्र नहीं बनाते। देखते हैं।

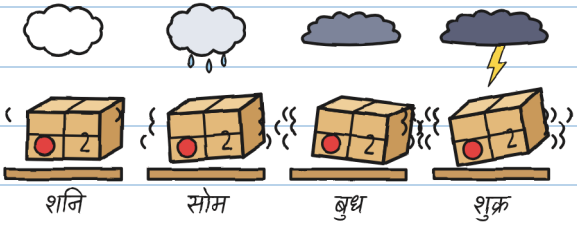
अध्याय 1

तूफ़ान का शिकारी

मारा की दुकान में एक पार्सल काँप रहा है। हर दिन थोड़ा ज़्यादा।
मैं इसे हाथ नहीं लगाऊँगा।
जो आख़िरी पार्सल जूलिता और मैंने पहुँचाया था, वह एक अंडा था। अब उसका नाम चूरा है, उसके पंख हैं और वह मेरी हर बात की नक़ल उतारती है।

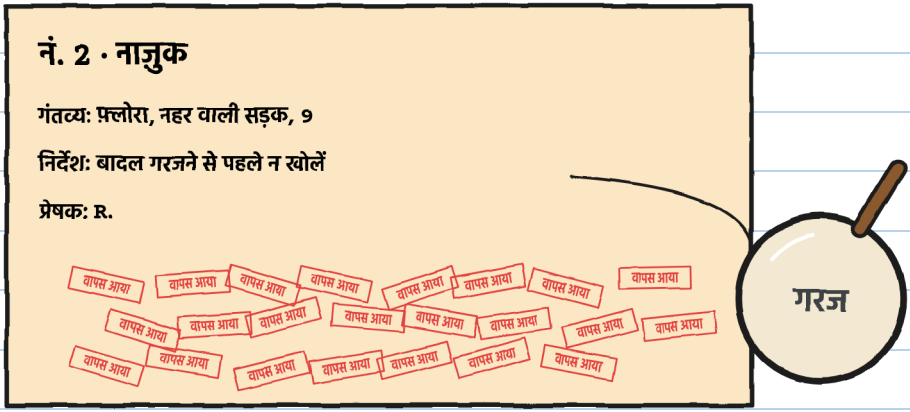
मेरे घर के सामने वाली दुकान में उन्नीस वापस आए पार्सल बाक़ी हैं। एक को बहुत जल्दी है।

थरथर-मीटर
नं. 2 का



डर नहीं है: तूफ़ान आ रहा है। शनिवार को, शाम छह बजे। मैंने मौसम की ख़बर छह बार देखी है। –ज.

वापस आया पार्सल हमेशा लौट आता है। जो उसे पाए, उसे लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त करने होते हैं, जैसी जूलिता के हरे मार्कर की है। वरना वह सुबह होते ही उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट जाता है। इन सबको एक ही व्यक्ति ने भेजा है: R.



नं. 2 पर तेईस "वापस आया" की मुहरें लगी थीं।

तेईस। मैंने दो बार गिना है। —ज.

"तेईस बार मैं इसे ख़ुद लेकर गई हूँ," मारा ने कहा। "और एक बार भी तूफ़ान में नहीं।"

शनिवार को, दस बजे, मारा नं. 2 के साथ हमारा इंतज़ार कर रही थीं। टोन्यो वहाँ था। हर शनिवार हम तीनों की सज़ा होती है, क्योंकि हमने नं. 1 बिना इजाज़त के पहुँचा दिया था। हम दुकान में मदद करते हैं।

"यह वाला," मारा ने कहा, "तुम लोग पहुँचाओगे। आज शाम को।"

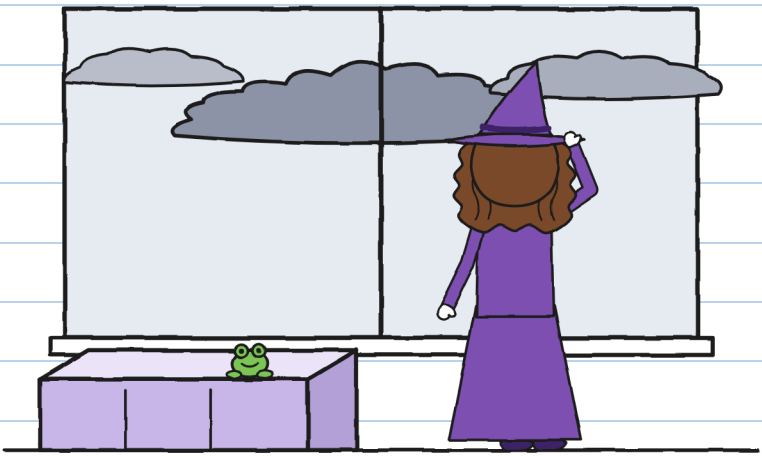


जूलिता बहुत ऊँची उछली। उसने "बाक़ी 19" का बोर्ड लगभग छू लिया।

मारा ने तीन शर्तें रखीं। उन्होंने उन्हें उँगलियों पर गिनाया:

1. तुम लोग पाँच बजे निकलोगे, तूफ़ान से पहले। तूफ़ान गुज़रने तक फ़्लोरा के घर पर रहोगे।
2. तुम्हारे घर वालों को पता है। फ़्लोरा को भी।
3. लेबल का नियम: बादल गरजने से पहले मत खोलना। ऊपर वाली गरज चलेगी; दूर वाली नहीं।

"और आप नहीं आ रहीं?" जूलिता ने पूछा।
"मुझे यहाँ कुछ काम हैं," मारा ने कहा। और उन्होंने खिड़की से बाहर देखा: आसमान स्लेटी हो रहा था।



कौन-से काम? –ज.

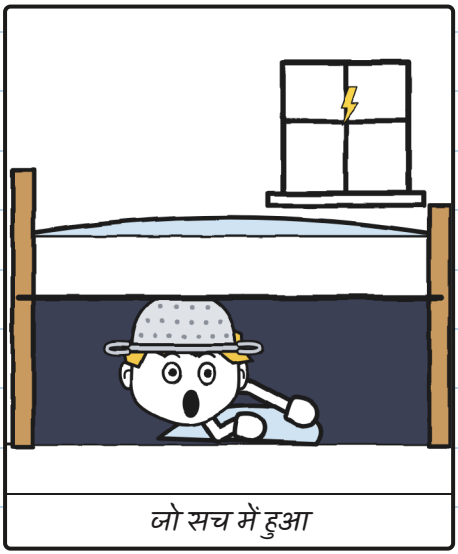
तभी जूलिता ने मुझे देखा।
"तुम्हें तूफ़ान पसंद हैं?"

और मैंने वही कहा जो ऐसे में सब कहते हैं:

"बहुत पसंद हैं। अपने दूसरे मोहल्ले में मैं प्रोफेशनल तूफ़ान का शिकारी था।"



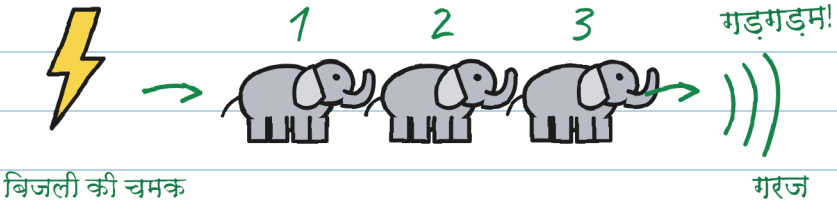
मैंने जो कहा



जो सच में हुआ

पलंग के नीचे का प्रोफेशनल। –ज.

जूलिता ने मुझे तूफ़ान गिनना सिखाया। मेरी डायरी में।
बिना इजाज़त, हमेशा की तरह:



एक हाथी, दो हाथी, तीन हाथी...

1 हाथी = 1 सेकंड

3 हाथी = 1 किलोमीटर (लगभग)

0 हाथी = ठीक ऊपर!

↖ यह लेबल वाली गरज है।
दूर वाली गरज पार्सल नहीं खोलती।

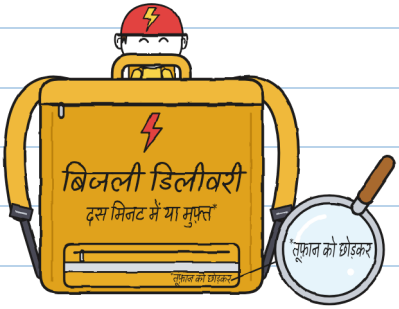
ज़्यादा हाथी: वह बिजली और दूर गिरी।

अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो: अंदर चलो!

जो पता हो, उससे कम डर लगता है। –ज.

मुझे इसकी ज़रूरत नहीं थी: मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद हैं।
फिर भी मैंने लिख लिया, कहीं काम आ जाए।

टोन्यो ने मेरे कंधे के ऊपर से लेबल पढ़ा।
"'बिजली' तूफ़ान में डिलीवरी नहीं करती।"
उसने हमें बैग के छोटे अक्षर दिखाए।
"अभी तूफ़ान नहीं है," जूलिता ने कहा।
टोन्यो ने फिर देखा। "अभी" का कहीं ज़िक्र नहीं था।

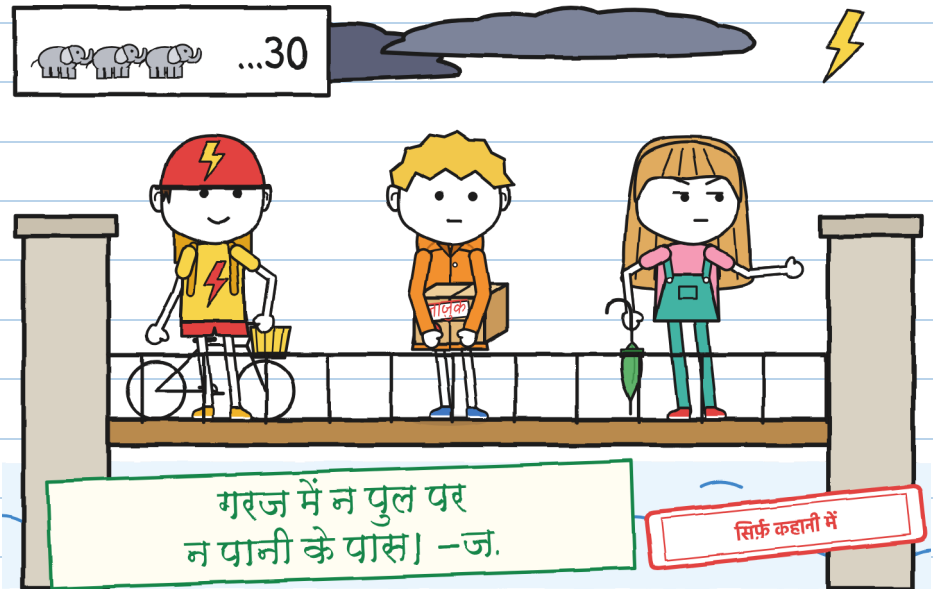


छोटे अक्षर बहुत ही छोटे थे। –ज.

और वह हमारे साथ आ गया।
पाँच बजे मैं रेनकोट लेने घर गया।
"नारंगी वाला पहनो," मम्मी ने दरवाज़े से कहा। "पक्का जाओगे? तुम तो जब बादल गरजते हैं..."
"बाय, मम्मी!"

"तुम तो जब बादल गरजते हैं..." क्या? –ज.

हमने बड़ा पुल पार किया। रात को उसे जहाज़ों के लिए उठा देते हैं। आसमान और काला होता जा रहा था। बीच में जूलिता ने पानी की ओर हाथ हिलाया। बहुत गंभीर चेहरा बनाकर। नहर और उसकी बनती नहीं।



बहुत दूर आसमान चमक उठा। जूलिता ने तीस हाथी गिने। गड़गड़म।

"वह बिजली करीब दस किलोमीटर दूर गिरी," उसने कहा। "मौसम की ख़बर में तूफ़ान छह बजे के लिए है।"

"बादल गरजा!" टोन्यो बोला। "अब खोलें?"

"यह वाली गरज पार्सल नहीं खोलती," जूलिता ने कहा।
"लेबल वाली गरज बिजली की चमक के साथ ही आती है: शून्य हाथी। पर यह अब सुनाई दे रही है: अंदर चलो!"
हम नहर वाली सड़क तक भागे। मैंने ऐसा दिखाया जैसे मुझे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा।

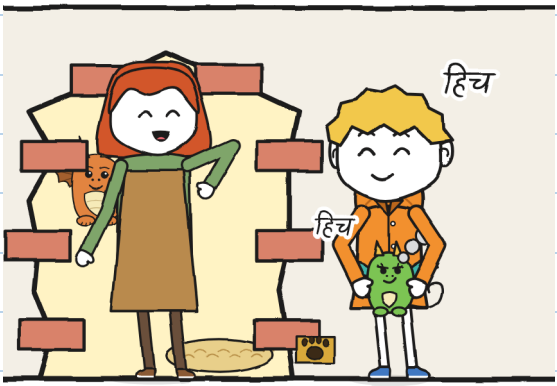
"क्या यह हिच थी?" जूलिता ने पूछा।
"नहीं," मैंने कहा। "हिच!"



यह मुझे बचपन से होता है, सिर्फ़ गरज पर। हर गरज पर बहुत सारी हिचकियाँ लगातार। हर तीन सेकंड में एक। तूफ़ान सिर पर हो तो रुकती नहीं। यह डर नहीं है। मेरा शरीर अपने आप करता है। मुझसे पूछे बिना।

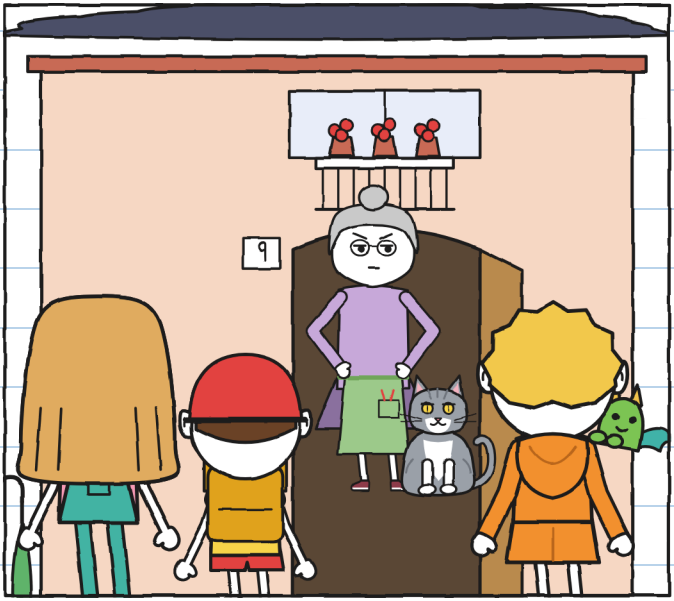
इसे डर कहते हैं। –ज.

वेरा अपने दरवाज़े पर हमारा इंतज़ार कर रही थीं, गोद में चूरा को लिए। शनिवार को चूरा मेरे साथ घूमने जाती है।
"आज सिर्फ़ फ़्लोरा के घर तक: यह उसका पहला तूफ़ान है," वेरा ने कहा और उसे मुझे दे दिया। "यह तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है, गुनी। जो तुम महसूस करते हो, उसकी भी। अगर यह डर जाए, तो इसे खींचना मत: यह पकड़ लेती है। तूफ़ान गुज़र जाए, तो आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाना, मैं आ जाऊँगी।"
"मुझे कुछ महसूस नहीं होता," मैंने कहा। "मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद हैं।"



दूर कहीं बादल गरजा। मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया। उसकी नाक से धुआँ निकला।
"अंदर चलो, अभी!" वेरा ने कहा।

फ़्लोरा का घर वही है जिसकी बालकनी में गमलों के फूल खिले हैं। दो शनिवार पहले वे उसी बालकनी से हमें देख रही थीं। हम ड्रैगनों के घर का दरवाज़ा ढूँढ रहे थे। वह दीवार जैसा दिखता है।



फ़्लोरा ने दरवाज़ा खोल दिया। हमें दस्तक देने का समय ही नहीं मिला। उन्होंने डिब्बे को देखा। आसमान को देखा। चूरा को देखा।

"यह वेरा की बच्ची है। देखना, मेरे फ़र्न न जला दे," उन्होंने कहा। "आ जाओ अंदर, पानी आने वाला है। बता दूँ: मैं पत्थरों पर दस्तख़त नहीं करती।"

अध्याय 2

गरज!

फ़्लोरा की रसोई पौधों से भरी है। पीछे एक काँच का दरवाज़ा ग्रीनहाउस में खुलता है। उसके पास वाला दरवाज़ा, जिसमें बिल्ली वाला छोटा दरवाज़ा है, आँगन में खुलता है। टोन्यो ने बारिश की वजह से साइकिल गलियारे में रख दी।



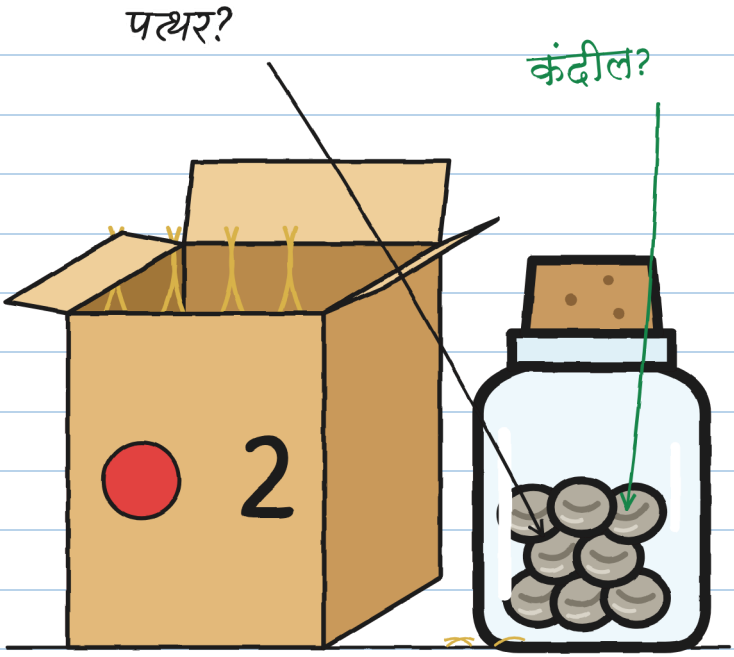
ग्रीनहाउस के काँच पर पेंट की हुई बूँदें थीं। वे नीचे गिरने की जगह ऊपर चढ़ रही थीं।

"R. के शीशे हैं," फ़्लोरा ने कहा। "बारिश को तब अंदर आने देते हैं जब मैं चाहूँ। बिजली को कभी नहीं।"

फ़्लोरा ने डिब्बा मेज़ पर रखा। उन्होंने उसे बिना पूछे खोल दिया। अंदर काँच की एक शीशी थी। उसमें आठ छोटी स्लेटी गोलियाँ थीं।

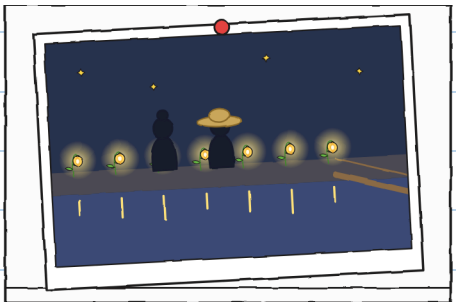
"बादल गरजने से पहले नहीं खोलना!" जूलिता चिल्लाई।

"मैंने डिब्बा खोला है, शीशी नहीं," फ़्लोरा ने कहा। "अंदर क्या है, यह मुझे पता है: R. ने मुझसे कंदील का वादा किया था, और हर बार पत्थर ही आते हैं।"



"कंदील क्या होता है?" मैंने पूछा।

फ़्लोरा ने हमें एक पुरानी फ़ोटो दिखाई। रात में नहर का रास्ता। किनारे पर छोटी बत्तियाँ।



"ये पौधे हैं," फ़्लोरा ने कहा। "ये बिजली की रोशनी सँभालते हैं और रात भर जगमगाते हैं।"
"और क्या इन्हें R. ने लगाया था?"
"बीज जगे हुए आते थे। मिट्टी में डालती थी। सोया बीज मैंने कभी नहीं देखा।"
"और कंदील?"
"बुझ गए। R. का आना बंद। अब यह भेजा जाता है।"

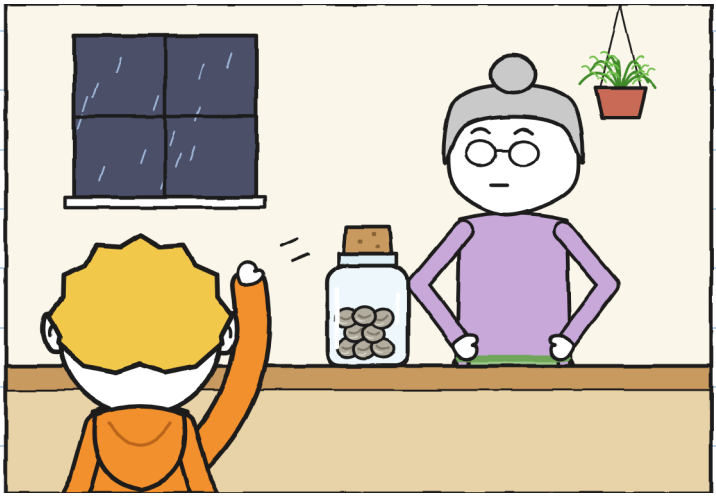
इसीलिए नहर इतनी अँधेरी है। इसीलिए पैदल पुल, नहर पार कराने वाला तख़्ता, डरावना लगता है।

डरावना था। मुझे तो बहुत: मैंने इसे अँधेरे में पार किया। –ज.

“R. का वादा हमेशा पूरा होता है,” फ़्लोरा ने कहा। “देर से सही, पर होता है। इसमें नहीं। तेईस बार यह शीशी मेरे पास आई है। तेईस बार पत्थर निकले।”

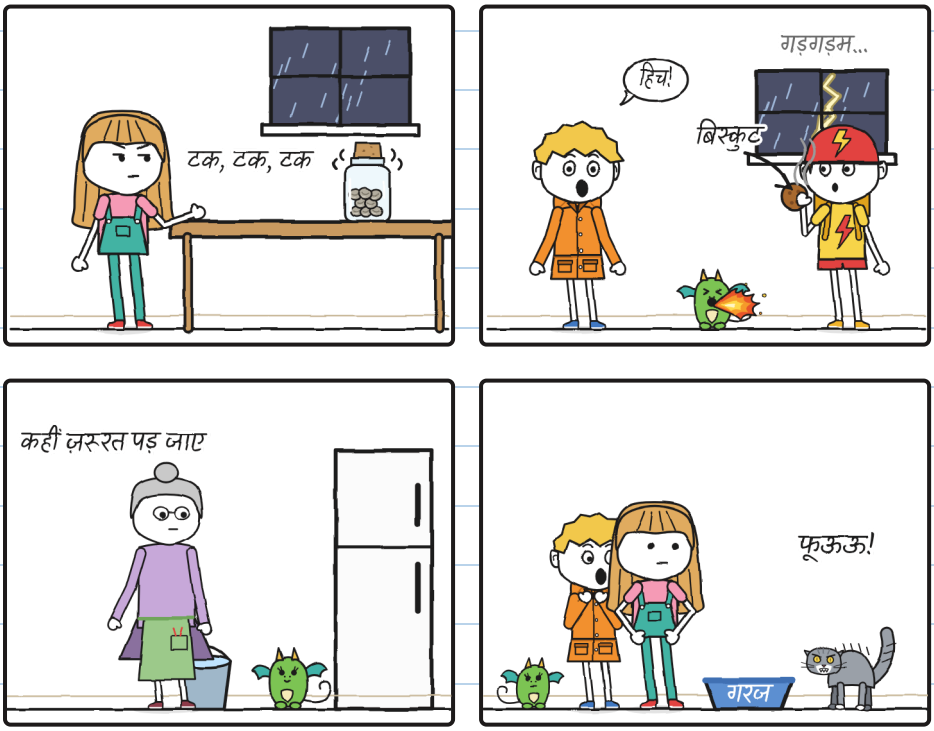
मैंने लेबल के बारे में सोचा। वह मुझे रटा हुआ था: बादल गरजने से पहले न खोलें।
“क्या आपने कभी इसे खोलने के लिए गरज का इंतज़ार किया?” मैंने पूछा।

फ़्लोरा ने मुझे ऐसे देखा जैसे मेरा सवाल बेवक़ूफ़ी भरा हो। “मैं किसी का इंतज़ार नहीं करती,” उन्होंने कहा। “गरज का भी नहीं।”



फ़्लोरा के बिल्ले का नाम गरज है। उसका नाम उसके कटोरे पर लिखा है। वह बादल जैसा स्लेटी है। और वह गरज की तरह घुरघुराता है।

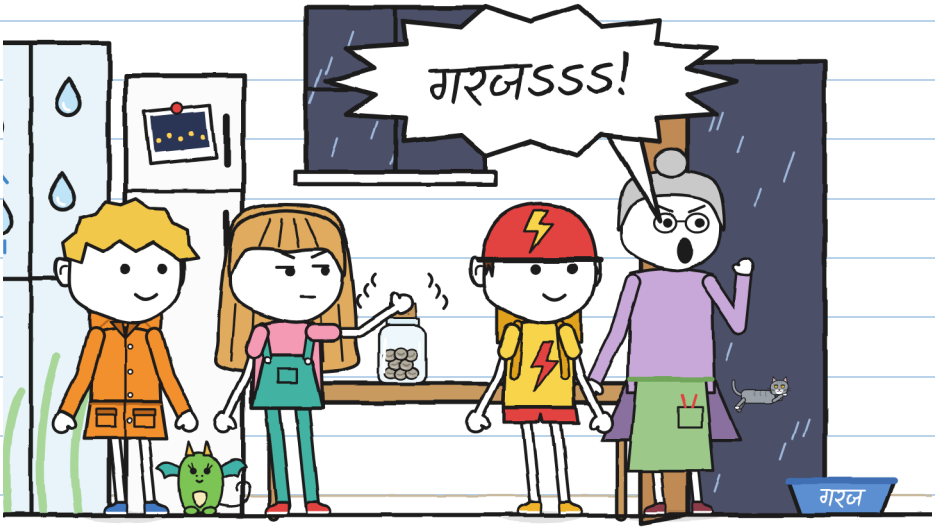
हम रसोई में तूफ़ान का इंतज़ार करते रहे। बहुत-सी छोटी बातें हुईं:



गरज से भी बुरा उसका इंतज़ार करना है। –ज.

शीशी खन-खन कर रही थी। हर पल और तेज़।
जूलिता गिन रही थी: "बारह हाथी।" फिर: "नौ।"
मेज़ के नीचे उसका पैर उछल रहा था।

"तुम फ़र्श में छेद कर दोगी," मैंने कहा।
"मैं गिन रही हूँ।"
"तो तुम्हारा पैर बहुत तेज़ गिनता है।"
तभी चूरा ने एक और छोटी-सी लपट छोड़ी। गरज बिल्ली वाले दरवाज़े से तीर की तरह आँगन में भाग गया। फ़्लोरा ने पीछे का दरवाज़ा खोला और चिल्लाई:
"गरजऽऽऽ!"



और जूलिता ने शीशी खोल दी।



"बादल गरजा!" वह बोली।

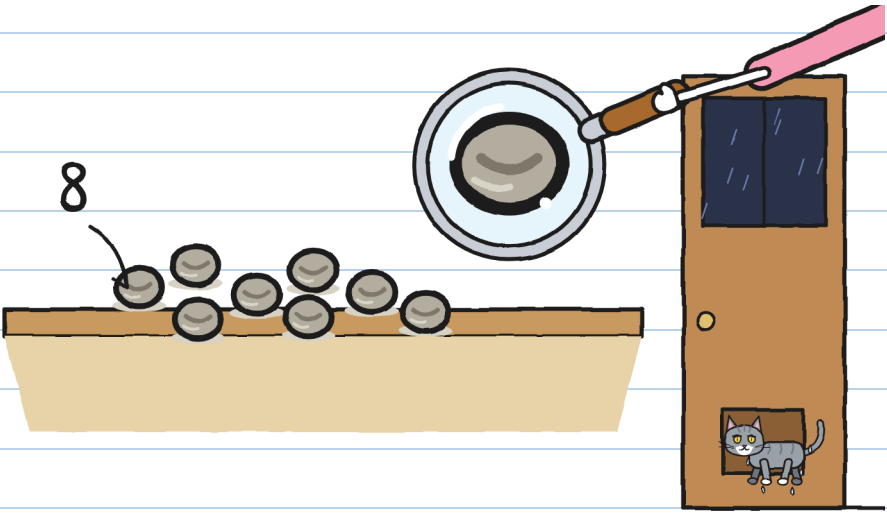
बादल नहीं गरजा। फ़्लोरा चिल्लाई। गरज तो बिल्ला है।

मैंने "गरज!" सुना। मैं यही तो इंतज़ार कर रही थी। किसी ने नहीं बताया कि यह बिल्ला है। –ज.

इसे मैंने पेज 17 पर लगा दिया।

वह पेज मैंने बाद में पढ़ा। –ज.

खुलते ही शीशी चुप हो गई। अंदर बस आठ स्लेटी गोलियाँ थीं। ठंडी और शांत। जूलिता ने उन्हें मेज़ पर उँडेल दिया। उसने उन्हें आतशी शीशे से देखा।
"इन पर एक लकीर है," उसने कहा। "जैसे बंद आँख।"



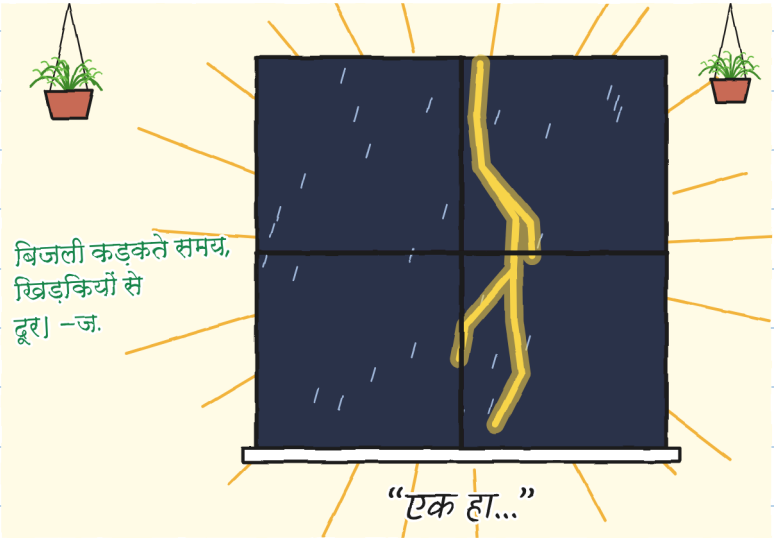
गरज बिल्ली वाले दरवाज़े से लौट आया, भीगा हुआ। फ़्लोरा ने दरवाज़ा बंद कर दिया।
"पत्थर। हमेशा की तरह," उन्होंने कहा। और जूलिता की ओर देखा।

जूलिता अपनी टी-शर्ट के रंग की हो गई।

“ये सो रहे हैं,” मैंने कहा। “ये पत्थर नहीं हैं: ये बीज हैं। इसीलिए लिखा है ‘बादल गरजने से पहले न खोलें’। हो सकता है कोई गरज इन्हें जगा दे। कोई तगड़ी वाली, जो खिड़कियों के काँच हिला दे।”

फ़्लोरा चुप हो गई। फिर बोली:
“अगर ये बीज हैं, तो साबित करके दिखाएँ।”

बाहर लगभग रात हो चुकी थी। शाम के छह बजे थे। बिजली चमकी। जूलिता ने गिनना शुरू किया:



और असली वाली आई।

गड़गड़ाहट!

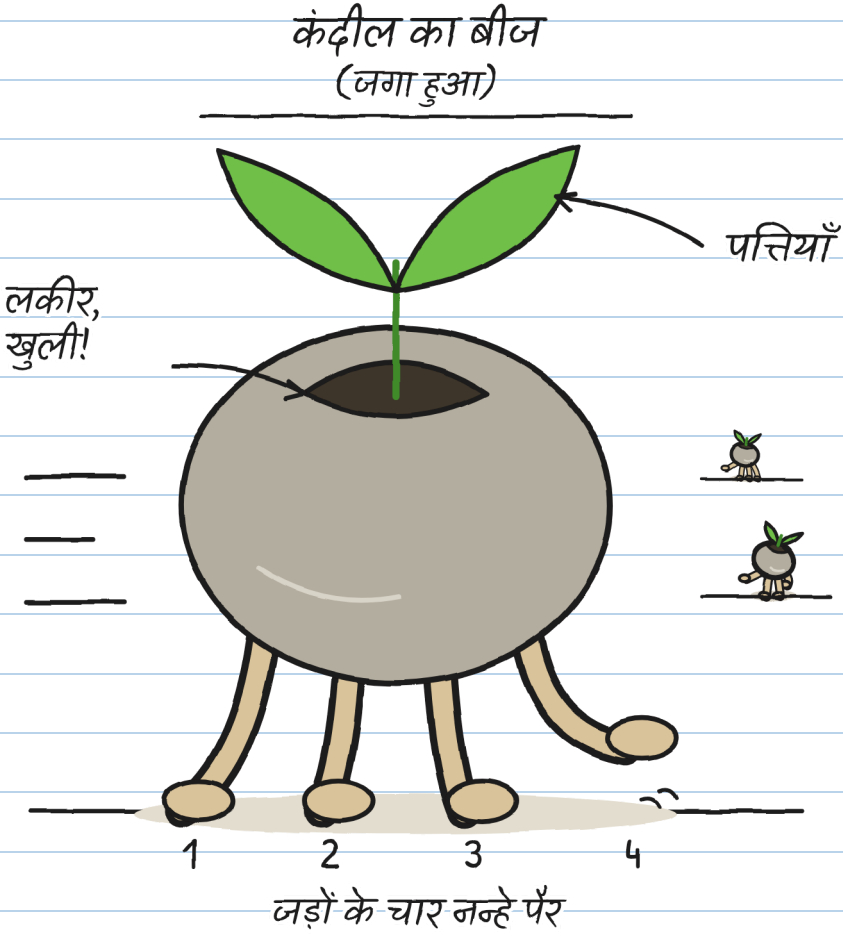
गरज और बिजली की चमक एक साथः तूफ़ान ठीक सिर पर था। मेज़, गिलास, काँच सब काँप उठे।

और बत्ती चली गई।



मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया: एक बड़ी लपट।
एक सेकंड के लिए हमें पूरी रसोई दिख गई।
मेज़ ख़ाली थी।





पत्थरों के पैर थे।

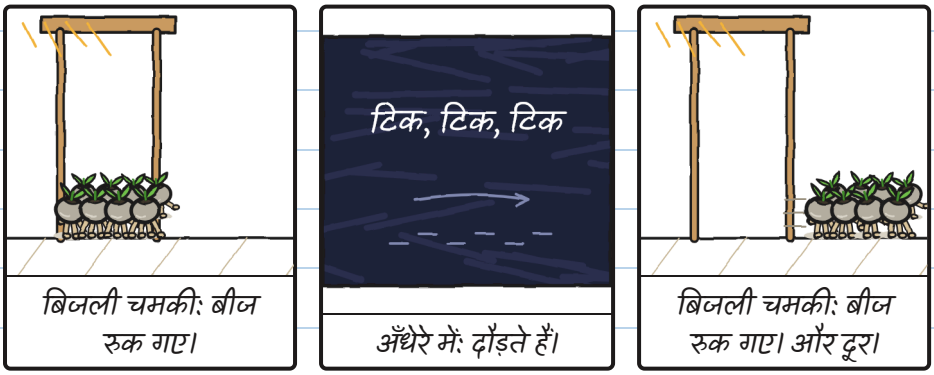
और जलदबाज़ी। –ज.

अध्याय 3

जब तुम नहीं देखते, ये हिलते हैं

अँधेरे में नन्ही-सी बारिश जैसी आवाज़ सुनाई दे रही थी: टिक, टिक, टिक। फिर बिजली चमकी: बीज और दूर थे। और शांत। बहुत शांत। जैसे कुछ हुआ ही न हो।

वे तेज़ भाग रहे थे। पर हर चमक उन्हें रोक देती थी। और चमकें बहुत थीं। मैं उन्हें मेज़ के नीचे से देख रहा था। मैंने फ़्लोरा की छलनी सिर पर रख ली: घर में, जब बादल गरजते हैं, मैं एक पहन लेता हूँ।



यह तो "स्टैचूयू" का खेल है। बीजों के साथ। –ज.

फ़्लोरा ने टॉर्च एक बीज पर डाली। बीज रुक गया।
उन्होंने दूसरे पर डाली। पहला भाग निकला।

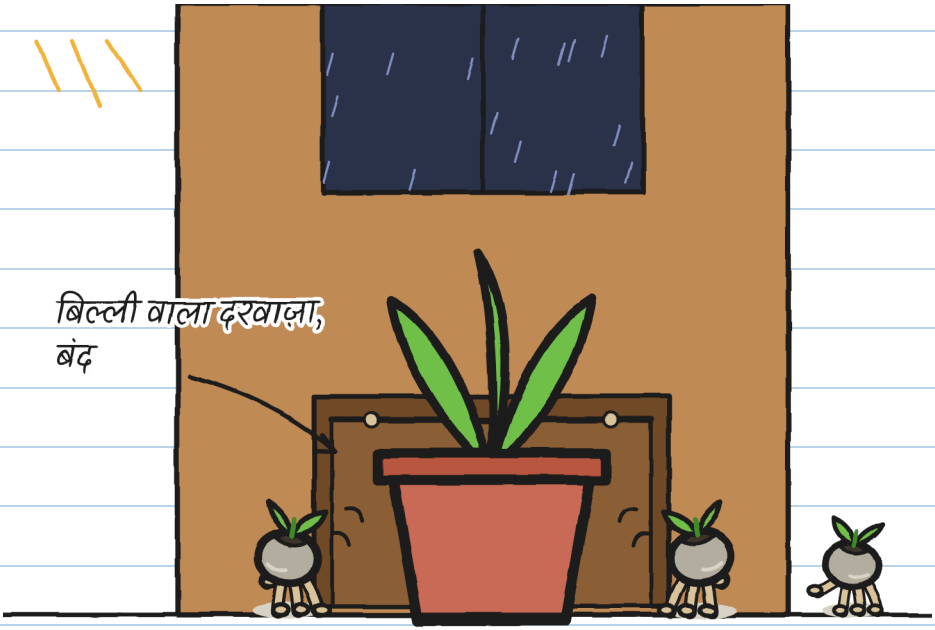
"ये बीज हैं! ये जाग रहे हैं!" फ़्लोरा चिल्लाईं।



उन्होंने रोशनी हटाई। अब दूसरा बीज भागा।
"हमें एक और टॉर्च चाहिए," मैंने कहा।
"तो कोई और उपाय सोचते रहो। मेरे पास बस यही है।"

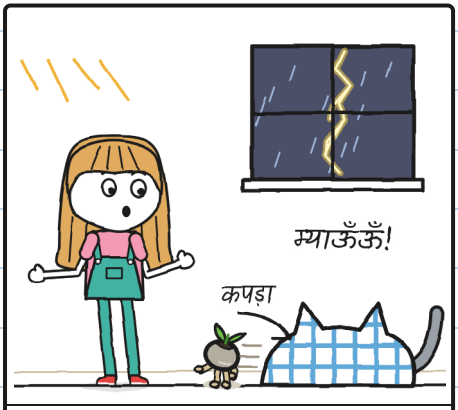
रोशनी में शांत। अँधेरे में दौड़। एक टॉर्च सबके लिए काफ़ी नहीं थी।

सब बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर जा रहे थे। फ़्लोरा ने उसके आगे एक विशाल गमला रख दिया।
"वे तूफ़ान की गीली मिट्टी ढूँढ रहे हैं," उन्होंने कहा। "यहाँ सिर्फ़ नल वाली मिट्टी है। और बाहर मिट्टी बहुत कम है; अगर ये निकले, तो बारिश इन्हें नहर में बहा ले जाएगी।"

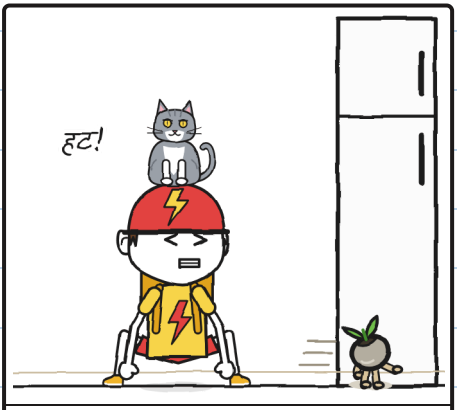


पर अब वे अँधेरे में पूरी रसोई में फैल गए थे। और रसोई में छिपने की सौ जगहें होती हैं।

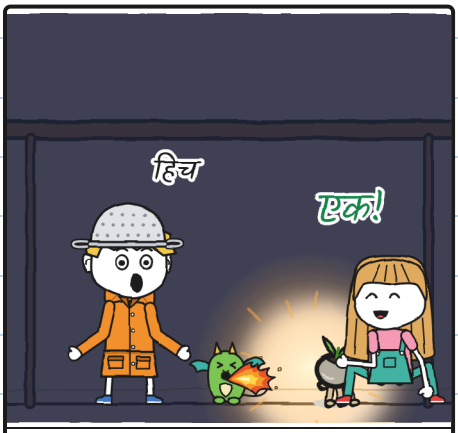
हमने सब कुछ आज़माया:



झूलिता, कपड़े से: उसने गरज को पकड़ लिया।



टोन्यो, हाथों से: गरज ने ही उसे पकड़ लिया।



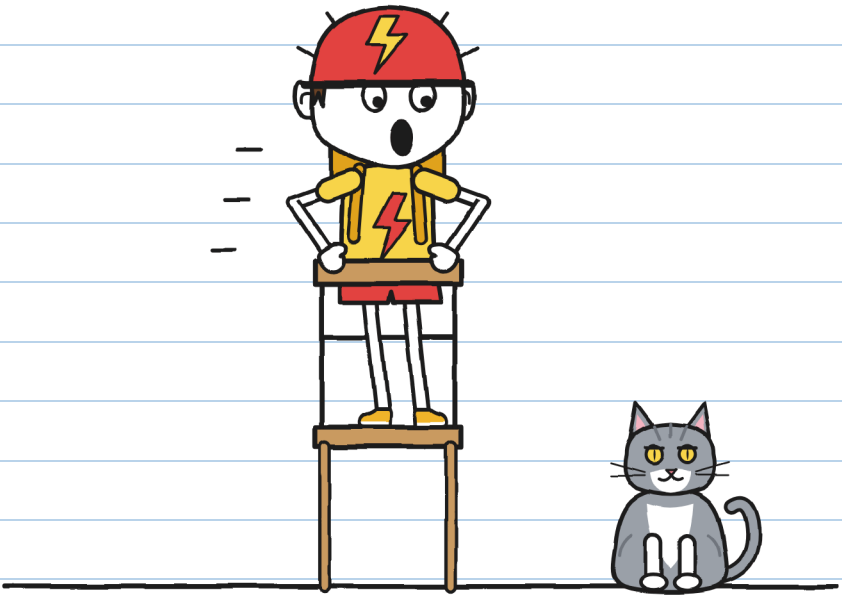
चूरा, अपनी लपट से: एक!



फ़्लोरा, टॉर्च से: दो!

गरज भी शिकार कर रहा था। वह लगभग अँधेरे में भी देख लेता है। हम नहीं।

टोन्यो को तूफ़ान से डर नहीं लगता। उसे बिल्लियों से डर लगता है।

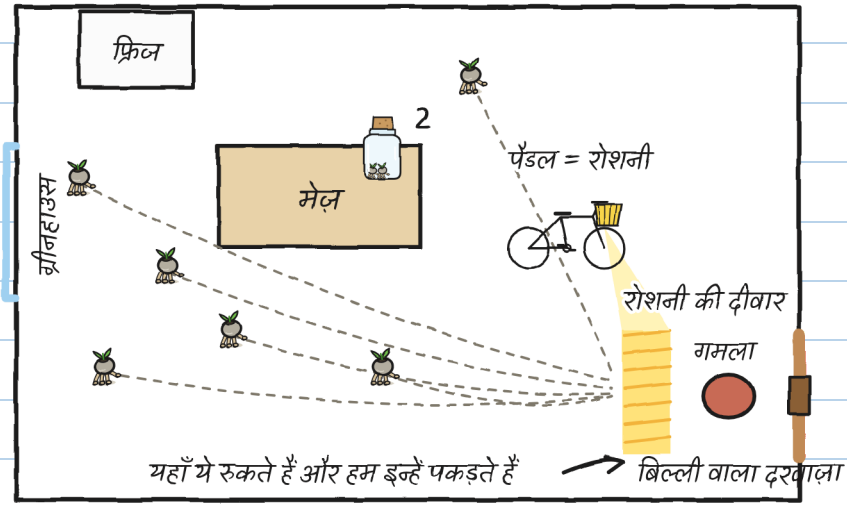


"अरे, यह बिल्ली नहीं है!" जूलिता ने उससे कहा। "यह गरज है!"
"और भी बुरा!"

दो डर और नाम सिर्फ़ एक। –ज.

मैं अब भी मेज़ के नीचे था, सिर पर छलनी पहने हुए।
वहाँ से मैंने कुछ देखा: बीज हमेशा बिल्ली वाले दरवाज़े पर लौट आते थे। गमला उनका रास्ता रोक रहा था। वे उसे धकेल रहे थे।

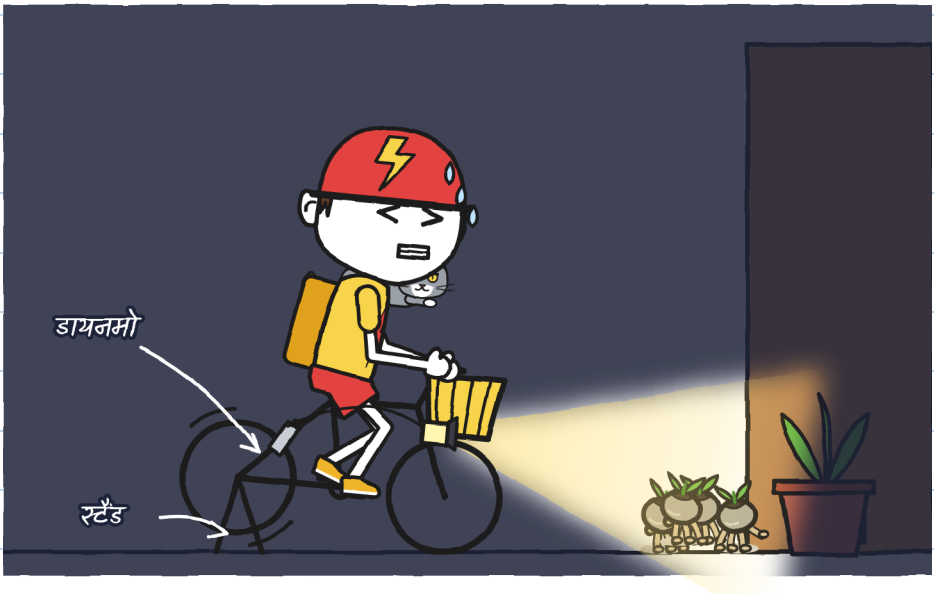
सब। एक ही जगह।
मैंने एक नक़्शा बनाया।



"टोन्यो, तुम्हारी हेडलाइट पैडल मारने से जलती है?"
"बिल्कुल।"
"तो आज तुम रोशनी की डिलीवरी करोगे।"

हमने साइकिल को उसके स्टैंड पर खड़ा कर दिया। हेडलाइट बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर थी। "बिजली" की रोशनी डायनमो से चलती है: पहिया घूमे तो रोशनी होती है। और टोन्यो ने पैंडल मारे।

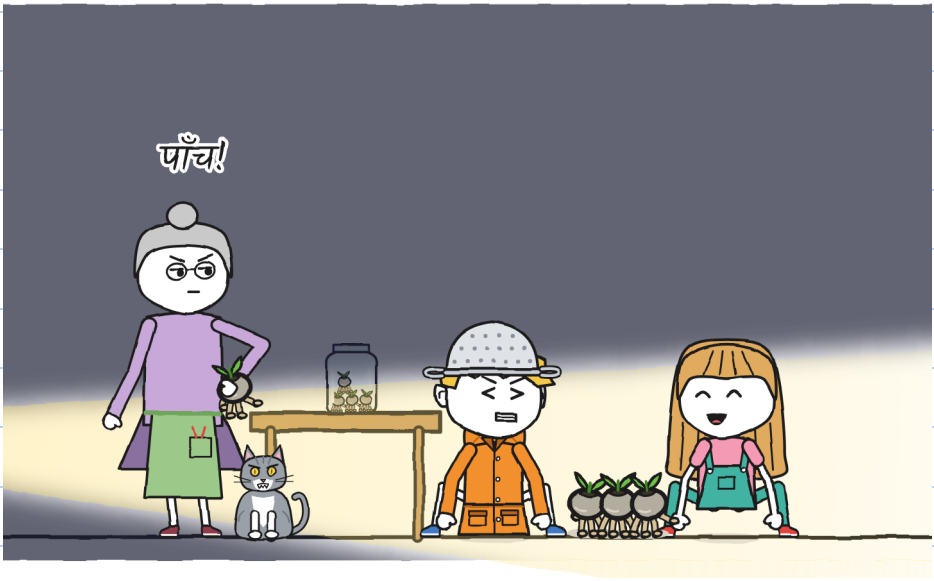
उसने पहले कभी इतने पैंडल नहीं मारे। ख़ासकर तब, जब गरज उसके ऊपर चढ़ गया।



आख़िरकार "बिजली" किसी काम की निकली। –ज.

बीज रोशनी तक पहुँचते और रुक जाते। हम उन्हें एक-एक करके पकड़ते। शीशी में। तीन। चार।

गरज ने एक और बीज मुँह में पकड़ लिया। फ़्लोरा ने दो उँगलियों से उसे निकाल लिया।
“पाँच!” उन्होंने कहा।



छह।

फ़्लोरा ने शीशी का ढक्कन बंद कर दिया। इस तरह कोई बीज नहीं भाग सकता था। फिर वे हमारी मदद करने झुकीं। और गरज उछलकर मेज़ पर चढ़ा और उसे गिरा दिया।

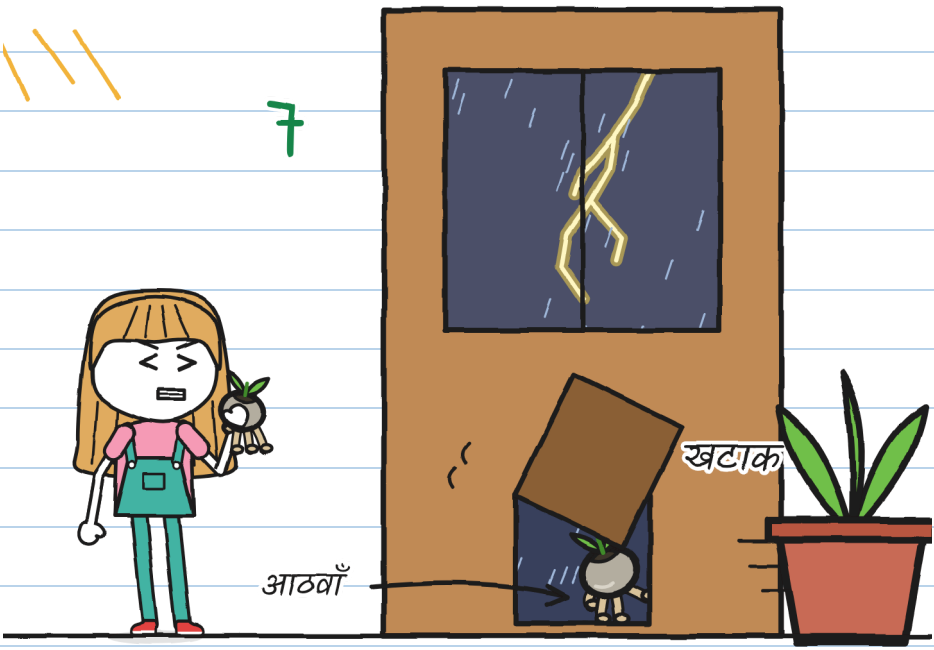


टोन्यो ने उसे हवा में ही लपक लिया।
"'बिजली'," उसने कहा। "एक सेकंड में या मुफ़्त।"

पर उसने पैडल मारना छोड़ दिया। रोशनी बुझ गई। और गरज बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर भाग गया।

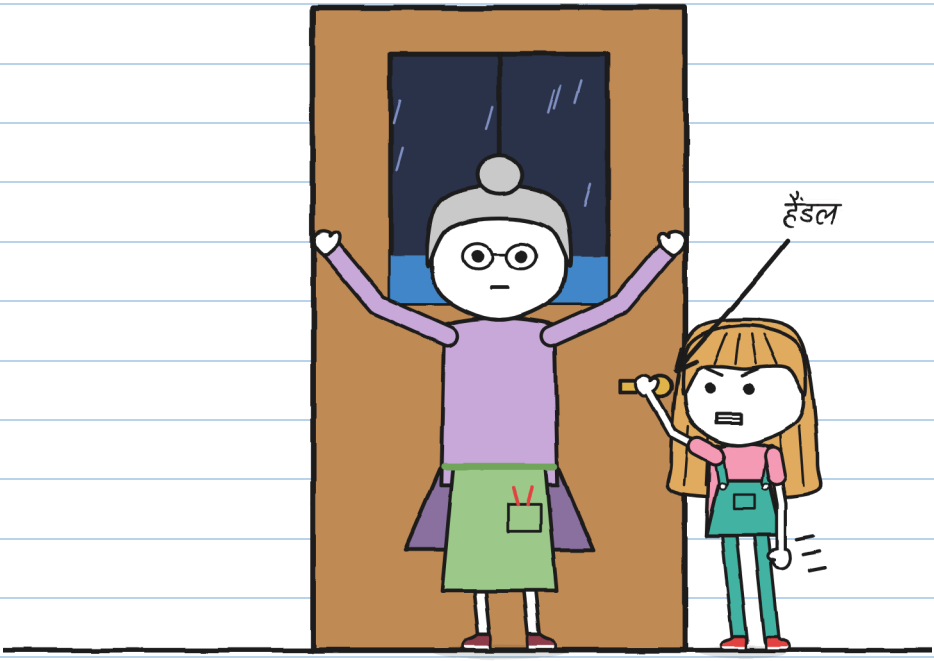
अँधेरे में: टिक, टिक, टिक। गरज ने गमला धकेला: घिस्स।
और बिल्ली वाला दरवाज़ा खटाक बोला।

फिर बिजली चमकी: फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था।
जूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।



आठवाँ बिल्ली वाले दरवाज़े से बाहर चला गया।

“मैं उसे लेकर आती हूँ!” जूलिता ने कहा, उसका हाथ हैंडल पर था।
“बिजली कड़क रही हो तो कोई बाहर नहीं जाएगा,” फ़्लोरा ने दरवाज़े के सामने खड़े होकर कहा। उन्होंने यह बहुत गंभीरता से कहा।



जूलिता ने बहस नहीं की। पर हैंडल भी नहीं छोड़ा।
थोड़ी देर बाद बिल्ली वाले दरवाज़े ने खटाक किया। गरज था, भीगा हुआ। आठवें बीज के बिना।

“बिजली... एक हाथी, दो हाथी।
गड़गड़म।
“दो,” जूलिता ने गिना। “अब भी बहुत पास है।”

“तो अब इन्हें लगाते हैं,” फ़्लोरा ने कहा। “तूफ़ान जाने से पहले। अँधेरे में।”
“वहाँ अंदर?” जूलिता ने पूछा।
फ़्लोरा ने काँच पर ऊपर चढ़ती बूँदों की ओर इशारा किया।
“जादू अभी बना हुआ है। बिजलियाँ बाहर रहती हैं।”



फिर उन्होंने चूरा की ओर देखा।
“अँधेरे में।”

चूरा ने मुझे देखा। और हिच किया।

अध्याय ५

हिच

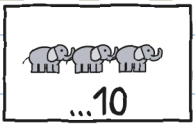
फ़्लोरा ने बताया कि कंदील कैसे लगाया जाता है। R. ने उन्हें यह सिखाया था। मैंने इसे ऑफ़िशियल लिखावट में लिखा:

कंदील कैसे लगाते हैं

1. 
तूफ़ान की गीली मिट्टी।
(जल वाली नहीं चलेगी।)

2. 
शीशी को मिट्टी पर खोलना।
(पहले खोलोगे, तो वे भाग जाएँगे।)

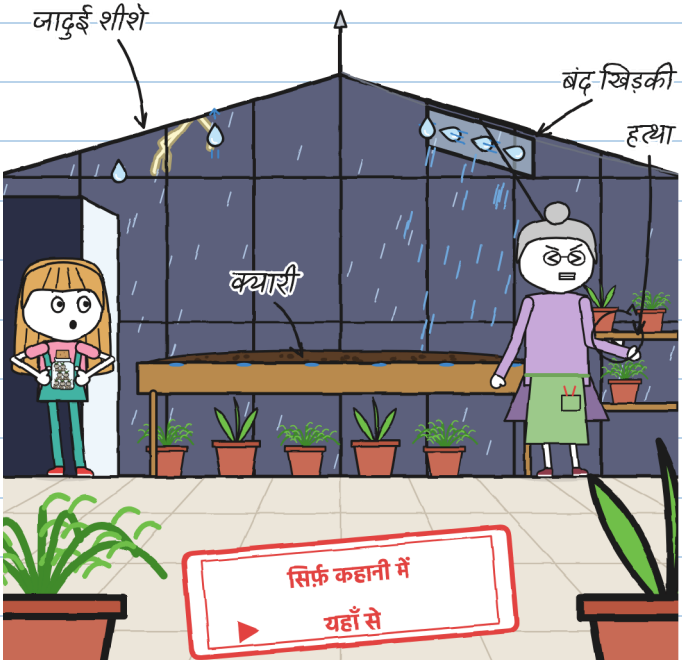
3. 
सब कुछ अँधेरे में: वे खुद
मिट्टी में उतर जाते हैं।
(अगर तुम इन्हें खुद दबाओगे, तो ये नहीं उगेंगे।)

4. 

तूफ़ान जाने से पहले:
दस से ज़्यादा हाथी होने पर,
अगली बार तक नहीं लगते।

जगाना: शून्य हाथी। लगाना: दस तक। ग्यारह पर, फिर सो जाते हैं। –ज.

फ़्लोरा ने एक हत्था घुमाया। खिड़की नहीं खुली: पेंट की हुई बूँदें नीचे उतरने लगीं।
असली बारिश काँच के आर-पार आकर क्यारी में गिरी: मिट्टी से भरी एक लंबी मेज़ पर।
"सब क्यारी में। एक बूँद भी फ़र्श पर नहीं," फ़्लोरा ने बारिश को हुक्म दिया।



ये शीशे सिर्फ़ कहानी में होते हैं। असली तूफ़ान में ग्रीनहाउस बिलकुल नहीं (पेज 76)। –ज.

"तूफ़ान की गीली मिट्टी," उन्होंने कहा। "अब सब अँधेरे में।"

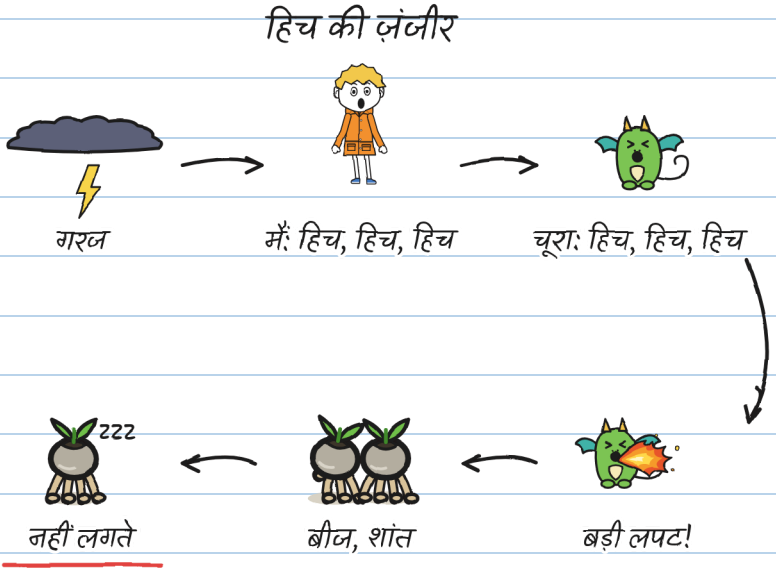
पर चूरा पहले से अंदर थी। वह फ़्लोरा के पैरों के बीच से घुस गई थी। किसी ने उसे नहीं देखा। वह क्यारी के नीचे, गमलों के बीच थी।

फ़्लोरा ने उसे सावधानी से खींचा। चूरा ने चारों पंजों से गमलों को पकड़ लिया। वेरा हमें यह पहले ही बता चुकी थीं।



रसोई में मेरी हर हिच ग्रीनहाउस में चूरा को जला देती।

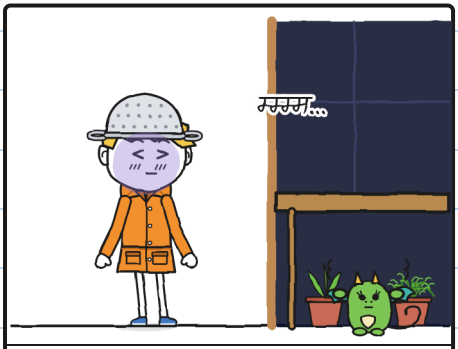
मैंने इसे समझने के लिए बनाया:



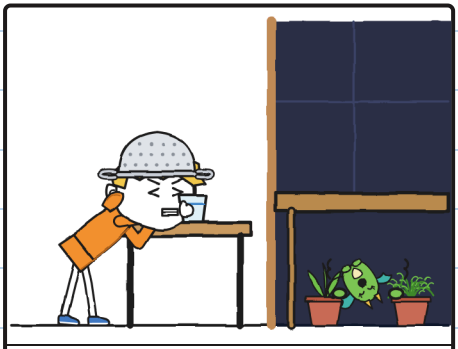
रसोई में हिच काम आ रही थी: बड़ी लपट, रुका हुआ बीज, पकड़ा हुआ बीज। ग्रीनहाउस में नहीं। हर तीन सेकंड में एक बड़ी लपट। अँधेरा कभी इतनी देर नहीं रहता था जितनी देर उन्हें लगने के लिए चाहिए।

ज़ंजीर को तोड़ना होगा। तोड़ने के लिए सबसे आसान टुकड़ा तुम हो। प्यार से। –ज.

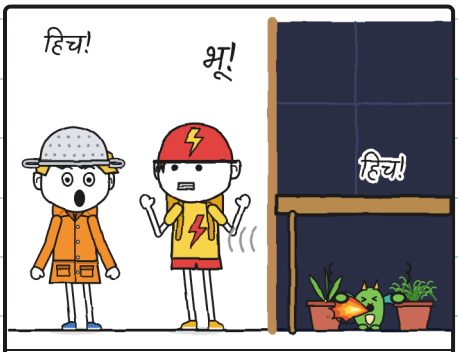
हमने हिचकी के सारे इलाज आज़माए:



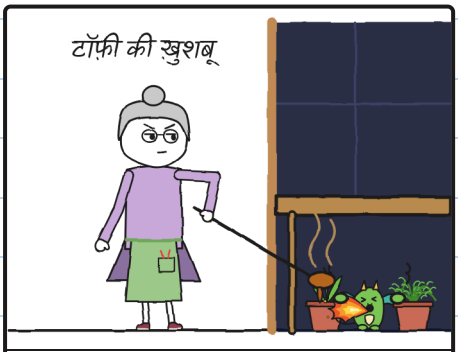
साँस रोकना



उलटा पानी पीना



डराना



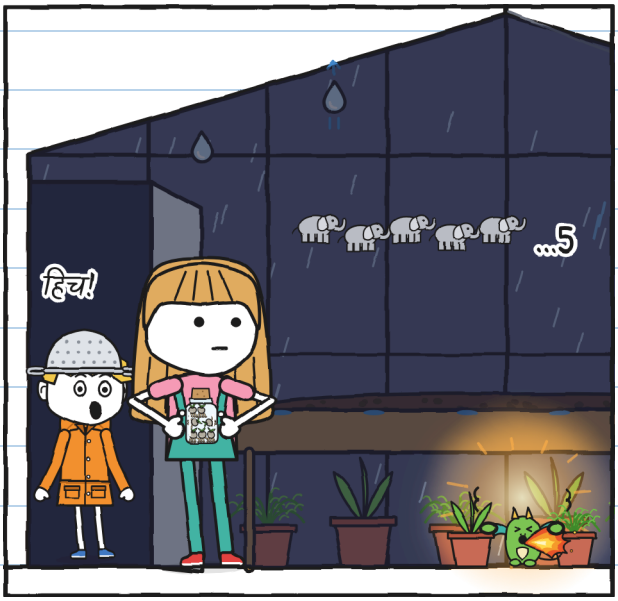
चीनी

चूरा ने उन सबकी नक़ल उतारी। बिना अपने गमलों को छोड़े।

इलाज: शून्य। हिचकियाँ: बहुत सारी। –ज.

"चार हाथी। पाँच।"
बादल गरजा।
"वह बिजली और दूर गिरी," जूलिता ने कहा।

सातों बीज शीशी में चक्कर काट रहे थे। मुझे हिच आ रही थी।



"और अगर हम ग्यारह तक पहुँच गए?" मैंने पूछा।
जूलिता ने बीजों को देखा।
"फिर से पत्थर।"
फिर उसने मेरी ओर देखा।

"चूरा तुम्हारे डर की नक़ल उतार रही है," जूलिता ने कहा।
"तो वह कुछ और उतार ले," मैंने कहा। और मैंने
हिच किया।
"अगर हम उसे बाहर ले आएँ?" मैंने पूछा।
"वह पकड़ लेती है। तुम देख चुके हो।"
जूलिता ने आवाज़ धीमी कर दी।
"पहले, उसके पास रहो।"

मेरे पास डर का कोई इलाज नहीं था। मेरे पास उसे छिपाने का एक प्लान था। और वह अब काम नहीं कर रहा था:

मेरा प्लान, ताकि किसी को पता न चले
कि मुझे गरज से डर लगता है:

1. कहना कि मुझे गरज बहुत पसंद है।
2. ~~हिच नहीं करना।~~ हिच हिच हिच हिच हिच
3. ???

और 3 नंबर? –ज.

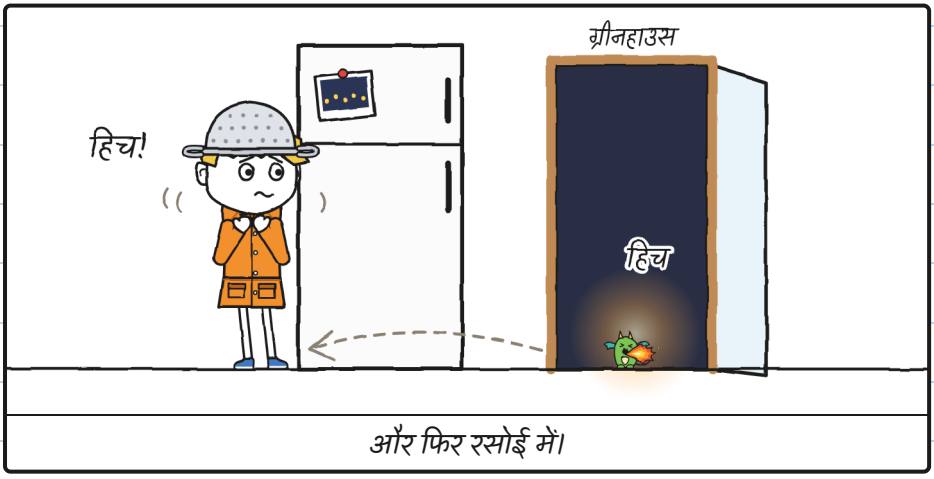
मैंने कोशिश की। सच में।



एक पैर अंदर।



एक गरज।



और फिर रसोई में।

ग्रीनहाउस में गरज सबसे ज़ोर से सुनाई देती है। पूरे मोहल्ले में।

दरवाज़े से मैंने काँच की छत से ऊपर देखा। दो चमकों के बीच मुझे वे दिख गए, छत से बहुत ऊपर। वेरा के ड्रैगन, तूफ़ान के बीच उड़ते हुए। वे तब उड़ने निकलते हैं जब कोई ऊपर नहीं देखता। इसीलिए वेरा हमारे साथ नहीं आईं: तूफ़ान में वे उन पर नज़र रखती हैं।



वे हिच नहीं कर रहे थे।

“चलो, शिकारी,” टोन्यो ने कहा।

मैं मज़ाक का इंतज़ार करता रहा। वह नहीं आया।

मैंने छलनी उतारकर फ़्लोरा को दे दी। उन्होंने उसे सचमुच के हेलमेट की तरह थामा।



और मैं अंदर गया।

छलनी बिजली को नहीं रोकती। डर के लिए कभी-कभी रोक लेती है। –ज.

अंदर बारिश ऐसे बज रही थी जैसे काँच पर हज़ार उँगलियाँ हों। मैं घुटनों के बल क्यारी के नीचे घुस गया। चूरा वहीं थी, गोला बनी हुई। वह मेरी तरह काँप रही थी।



गड़गड़म! मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया। बड़ी लपट ने हम दोनों को रोशन कर दिया।

हम क्यारी के नीचे दो तूफ़ान के शिकारी थे।

दरवाज़े से जूलिता ने धीमे से कहा। हँसे बिना:



"मेरे साथ गिनो।"

अध्याय 5

मेरे साथ गिनो

और हमने गिना। वह दरवाज़े पर। मैं क्यारी के नीचे, चूरा मेरे रेनकोट से सटी हुई काँपती हुई।

बिजली चमकी।
"एक हाथी। दो हाथी। तीन। चार। पाँच। छह।"
गड़गड़म।
"छह: करीब दो किलोमीटर," जूलिता ने कहा। "वह बिजली और दूर गिरी। हम अब भी सुरक्षित हैं।"



मैंने छह हाथी गिने। डर अब भी वहीं था।

मैं कह चुका था कि मुझे तूफ़ान पसंद हैं। दो बार। काम नहीं आया था।
चूरा ने मेरी ओर देखा।
मैंने सच कहकर देखा।

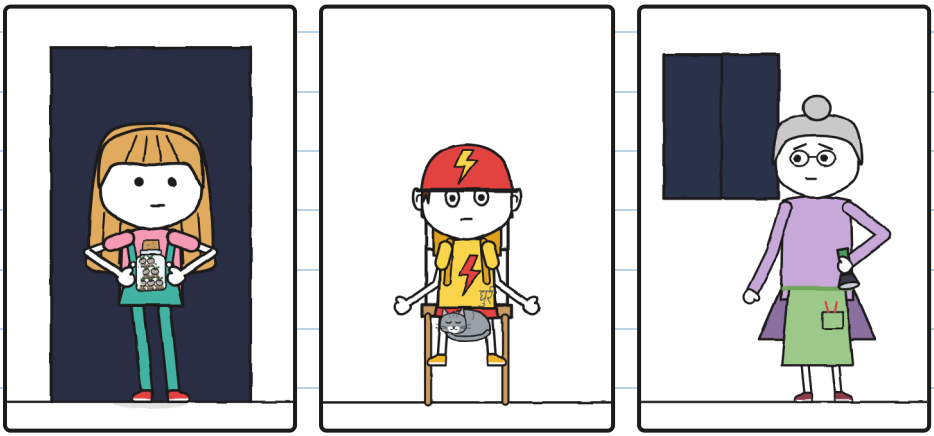


"मुझे गरज से डर लगता है।"

“मुझे पता है,” जूलिता ने कहा। “तुमने आज सुबह इसे पेज 6 पर बनाया था। मैं तुम्हारे कहने का इंतज़ार कर रही थी।”

“मुझे बिल्लियों से डर लगता है,” टोन्यो ने कहा। गरज उसके घुटनों पर सो रहा था। टोन्यो हिलने की हिम्मत नहीं कर रहा था।

“और मुझे उस चीज़ का इंतज़ार करने से, जो आती नहीं,” फ़्लोरा ने कहा। “इसीलिए मैं शीशी तुरंत खोल देती थी।”



और मुझे पैदल पुलों से। यह तो तुम सब जानते हो। –ज.

कोई नहीं हँसा। बारिश वैसे ही गिर रही थी। पर क्यारी के नीचे मैं अब अकेला नहीं था।

मैंने धीरे-धीरे साँस ली। चूरा ने भी धीरे-धीरे साँस ली।



बिजली चमकी। हमने साथ-साथ नौ तक गिना। गड़गड़म।

और मुझे हिच नहीं आई। न उस गरज पर, न अगली पर।

"अब!" फ़्लोरा ने फुसफुसाकर कहा।

जूलिता पंजों के बल अँधेरे में अंदर गई। उसने खुली शीशी गीली मिट्टी पर रख दी। और बिना आवाज़ किए दरवाज़े पर लौट आई।

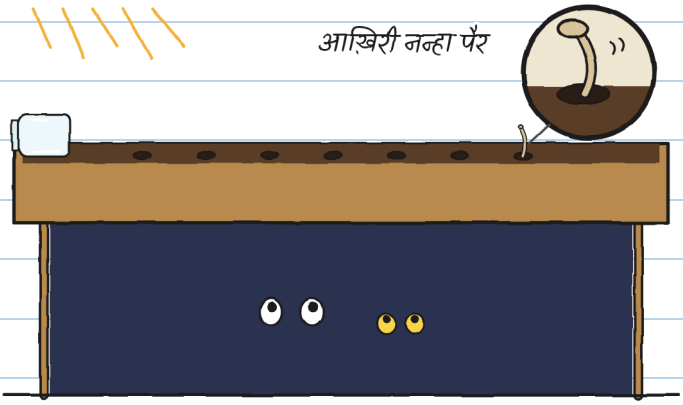


टिक, टिक, टिक। अँधेरे में शीशी से कुछ निकल रहा था।

बहुत दूर बिजली चमकी। हमने सिर्फ़ होंठों से दस तक गिना। गड़गड़म।

दस: आख़िरी गिनती जो काम की थी।

अगली बिजली में हमने उसे देखा:



शीशी ख़ाली थी। मिट्टी में सात छोटे गड्ढे। आख़िरी में अब भी एक नन्हा पैर बाहर झाँक रहा था।

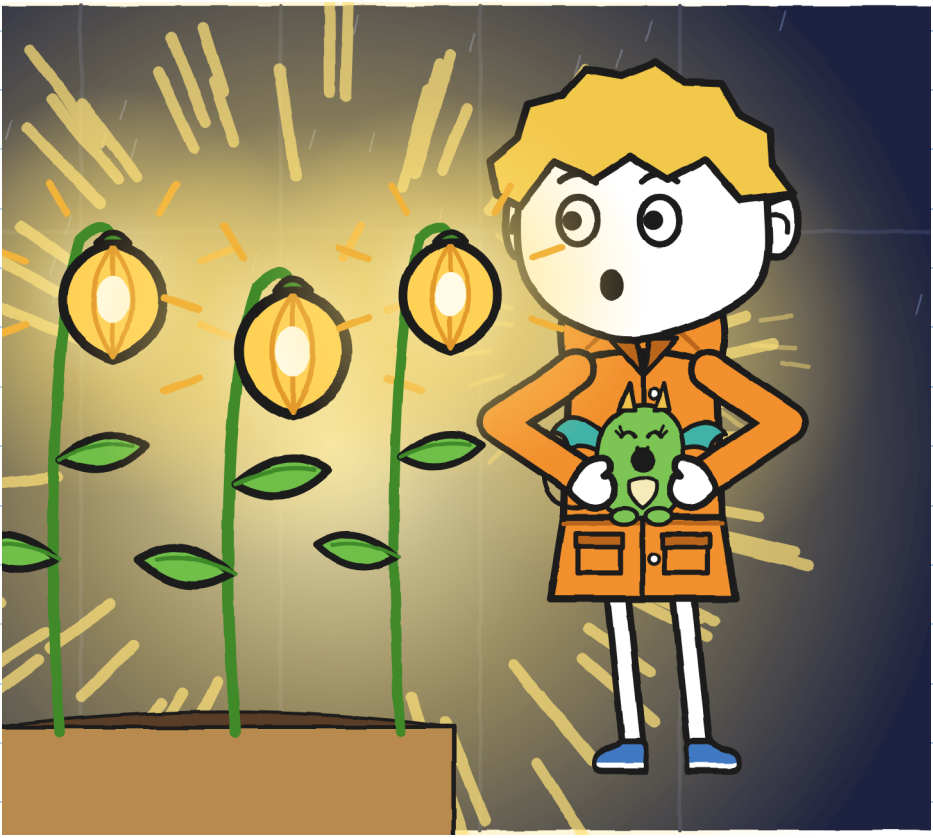
फिर थोड़ी देर कुछ नहीं हुआ। बस हम, अँधेरे में, क्यारी को देखते हुए।

और तभी पहला जल उठा।

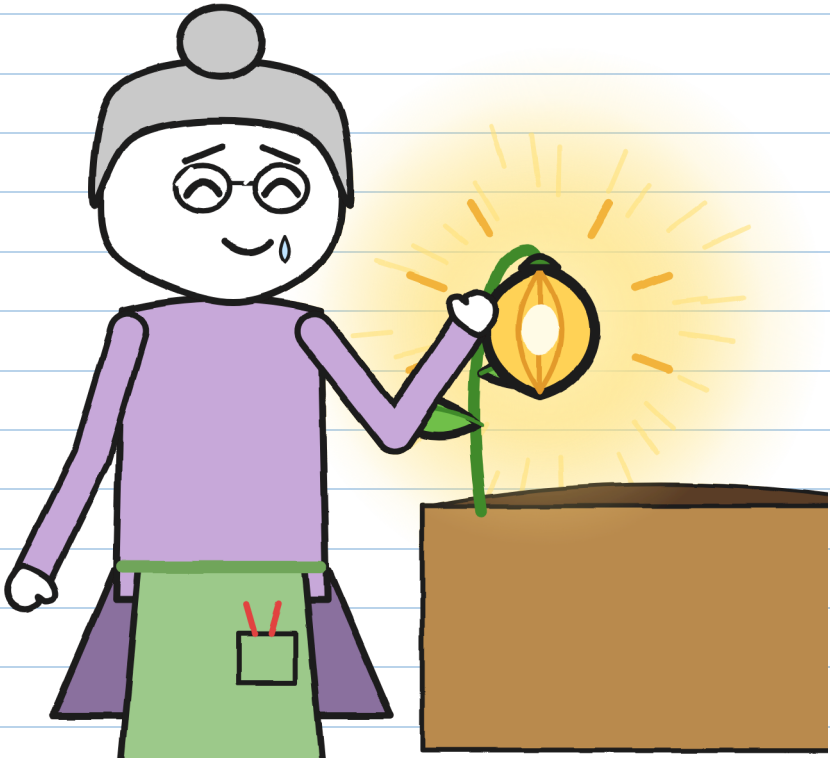
सात कंदील। हर एक के अंदर बिजली का एक छोटा-सा टुकड़ा।



चूरा ने हिच नहीं की। वह मुँह खोले कंदीलों को देख रही थी। ठीक मेरी तरह। अब वह मेरे डर की नक़ल नहीं उतार रही थी। वह इसकी उतार रही थी।



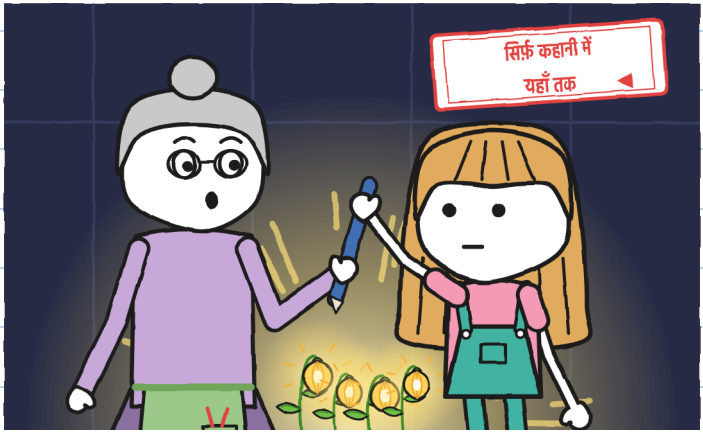
फ़्लोरा बहुत देर तक चुप रहीं। फिर उन्होंने एक कंदील को उँगली की नोक से छुआ। धीरे से। जैसे कोई उस चीज़ को छूता है जिसका उसने बहुत इंतज़ार किया हो।
“नहर का रास्ता ऐसा ही दिखता था,” उन्होंने कहा।



मैंने भी एक को छुआ। चूरा ने भी। वह गुनगुना था, धूप में रखे पत्थर जैसा।

फ़्लोरा ने हत्थे से बारिश रोक दी।
फिर उन्होंने पेन निकाला।
आख़िरकार वे दस्तख़त करने वाली थीं।
जूलिता ने दो उँगलियों से उसे रोक दिया।

"अभी नहीं।"
उसने सातों कंदीलों को देखा।
"एक बाक़ी है। शीशी मैंने समय से पहले खोली थी। हमें उसे ढूँढना होगा।"
फिर वह रसोई में गई। उसने डिब्बे से लेबल उतारा। उसे अपनी डंगरी की जेब में रख लिया।



पहुँचाओ तो पूरा पहुँचाओ। –ज.

हम रसोई में लौट आए।
"आँगन अभी बंद है," फ़्लोरा ने कहा। "हम अभी बाहर नहीं जाएँगे।"
हम रुके रहे। जूलिता के पास गिनने के लिए कोई बिजली नहीं बची। फिर आख़िरी गरज से आधा घंटा और रुके। अब बारिश नहीं हो रही थी। तूफ़ान जा चुका था।



और आठवाँ बाहर था। कहीं, अँधेरे में। समय पर मिट्टी न मिले, तो वह फिर सो जाता है। एक और पत्थर। और दस्तख़त के बिना, सुबह होते ही नं. 2 अपने शेल्फ़ पर लौट जाता है।

“चलो, उसे ढूँढते हैं,” जूलिता ने कहा।

फ़्लोरा ने रात को देखा। फिर उन्होंने आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाया। जैसा वेरा ने बताया था। वह इंगनों के घर की दीवार है।



“इस बार,” उन्होंने कहा, “तुम अकेले नहीं जा रहे।”

अध्याय 6

आठवाँ बीज

हम फ़्लोरा और वेरा के साथ निकले, एक लालटेन और एक साइकिल लेकर। जूलिता के पास ख़ाली शीशी और लेबल था। मेरे रेनकोट के अंदर चूरा थी। उसका बस सिर दिख रहा था।

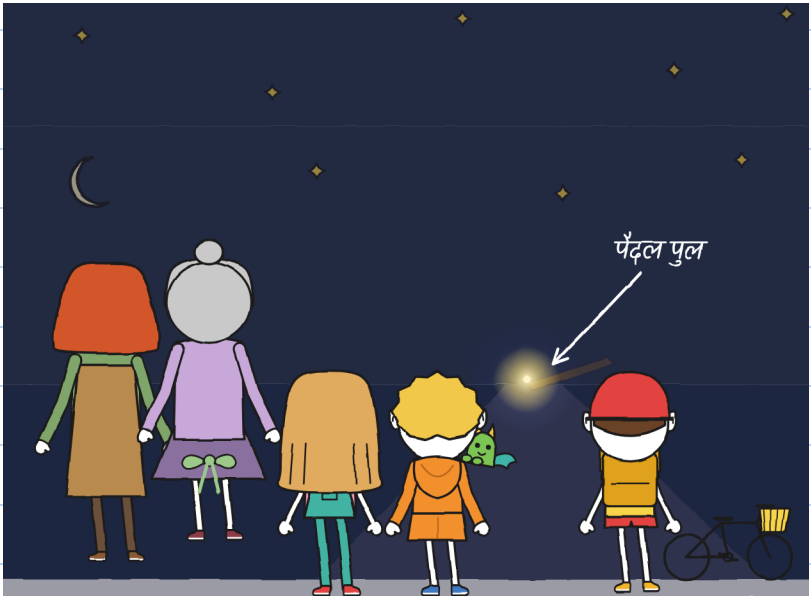
हमने आँगन में ढूँढा। पगडंडी पर। नहर के किनारे।



कुछ नहीं।
अगर आठवाँ सो गया था, तो वह उन पत्थरों में से कोई भी हो सकता था।

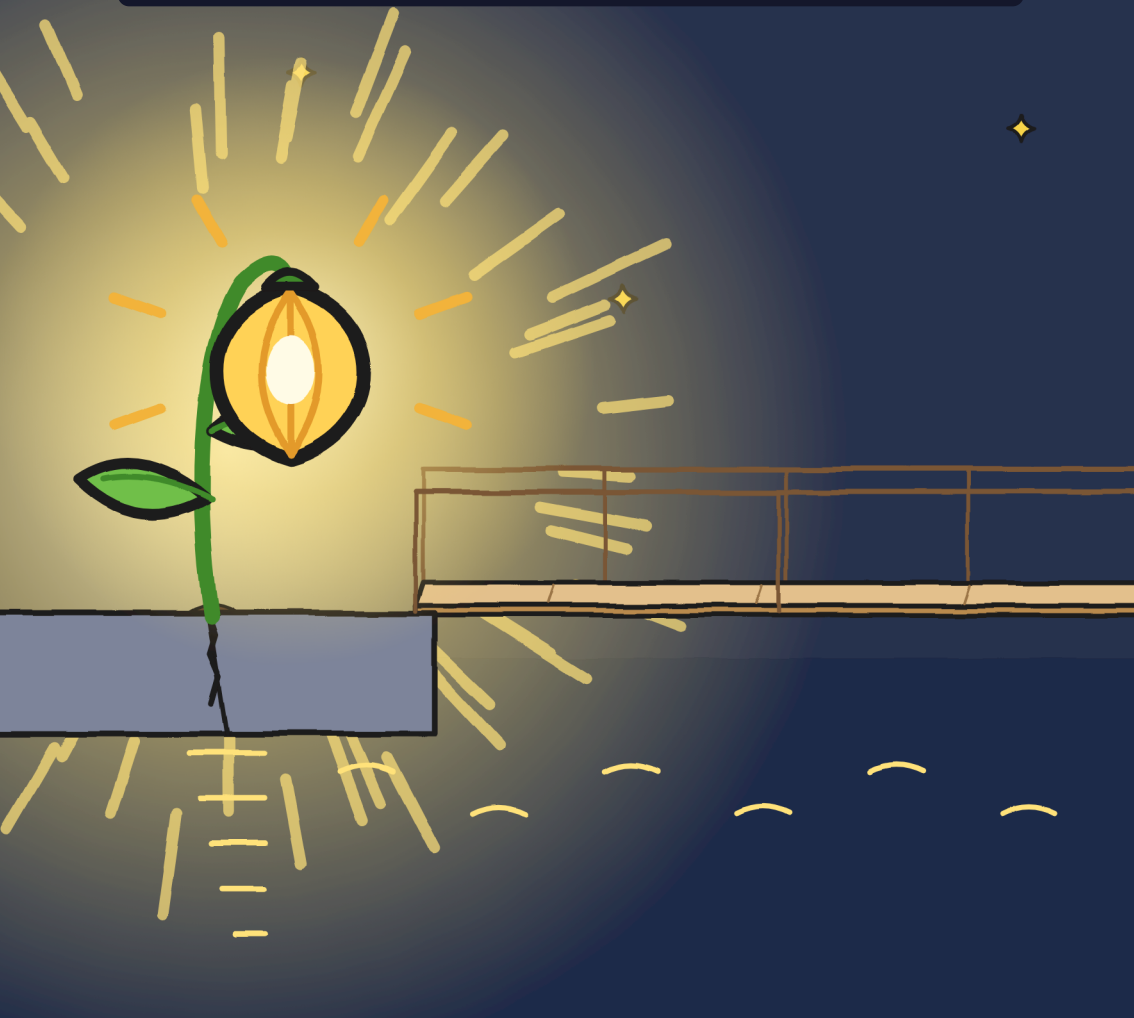
लालटेन की रोशनी से गीले पत्थर चमक रहे थे।
तभी मैंने सोचा: इतना छोटा कंदील चमक रहा हो, तो भी हमें दिखेगा नहीं।
"रुको। बत्तियाँ बुझा दो।"
टोन्यो ने साइकिल रोकी। वेरा ने लौ धीमी कर दी। फ़्लोरा ने टॉर्च बुझा दी।

हम स्थिर खड़े रहे।
रास्ते के छोर पर एक नन्ही-सी बत्ती थी।



पैदल पुल के सिरे पर।

मुझे लगता है कि बारिश उसे पगडंडी से बहाकर रास्ते तक ले आई थी। वह दो पत्थरों के बीच की दरार में अटक गया, जहाँ थोड़ी गीली मिट्टी थी। ठीक पैदल पुल के सिरे पर। वहाँ वह अपने आप उग गया। दूर से, एक नन्ही-सी बत्ती। पास से, उसने सब कुछ रोशन कर दिया।



जूलिता ने पैंदल पुल को बहुत देर तक देखा। रोशनी में वह कुछ और ही लग रहा था। छोटा। चौड़ा। बस लकड़ी का एक तख़्ता।

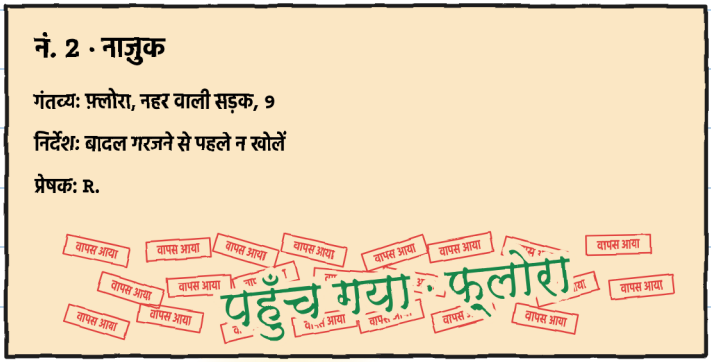
उसने पैंदल पुल पर एक पैर रखा। सिर्फ़ एक। फिर हटा लिया।

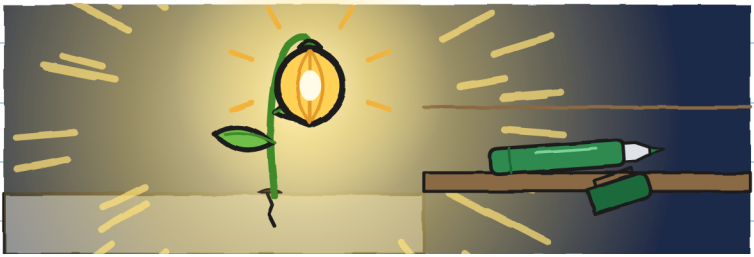


दूर से अब डर नहीं लगता। पास से भी लगभग नहीं। –ज.

“यह यहीं रहेगा,” फ़्लोरा ने कहा। “इसने अपनी जगह चुन ली है।”

जूलिता ने उन्हें लेबल और अपना हरा मार्कर दिया। वह स्याही नहीं मिटती। फ़्लोरा ने वहीं, आठवें बीज की रोशनी में, दस्तख़त किए। और मार्कर लौटा दिया।





विदा लेते समय फ़्लोरा ने मुझे अपनी छलनी दे दी: “इसे रख लो। अगले तूफ़ान के लिए। और मारा से कहना कि यह तो कब का हो जाना चाहिए था।”

वेरा ने चूरा को उसके घोंसले में छोड़ा। वे हमें वैन में दुकान तक ले गईं, पीछे टोन्यो की साइकिल रखकर। हम हाईवे वाले पुल से गए: रात को बड़ा पुल जहाज़ों के लिए उठा दिया जाता है। उन्होंने हमें दुकान के दरवाज़े पर छोड़ा और अपने ड्रैगनों के पास लौट गईं।

दुकान में अँधेरा था। मारा काउंटर पर नहीं थीं।

वे नीचे थीं।



“क्या अब बीत गया?” मारा ने पूछा।
“काफ़ी देर पहले,” जूलिता ने कहा।

कंबल। ईयरमफ़। हेलमेट की जगह एक पतीला।
तेईस डिलीवरी। एक भी तूफ़ान में नहीं।
अब मुझे समझ आया।

मैंने उन्हें फ़्लोरा का संदेश दिया। मारा ने पतीला भौंहों तक खींच लिया।

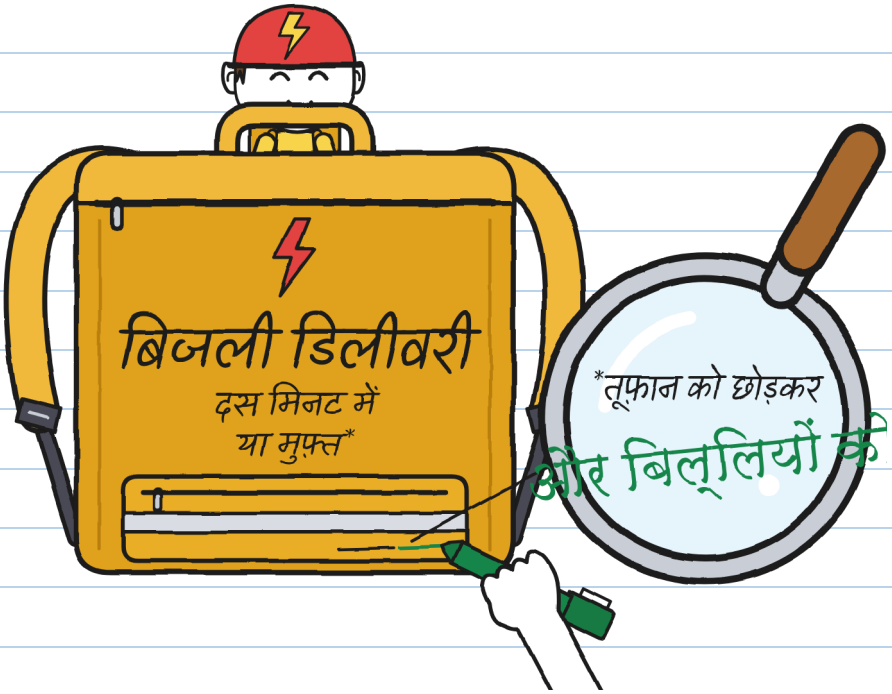
“मुझे भी गरज से डर लगता है,” मैंने उनसे कहा।
उन्होंने कंबल उठा दिया।



मैं उनके साथ काउंटर के नीचे घुस गया। हम दोनों के लिए जगह थी।

मारा ने टोन्यो के लिए एक डिब्बा उलटा करके रख दिया। स्टूलों के पास।
"तुम्हारी जगह। फ़िलहाल," उन्होंने कहा।

टोन्यो बैठ गया। जूलिता के मार्कर से उसने अपने बैग पर कुछ और लिख दिया: "और बिल्लियों को"।



अब छोटे अक्षर सच बोल रहे हैं। –ज.

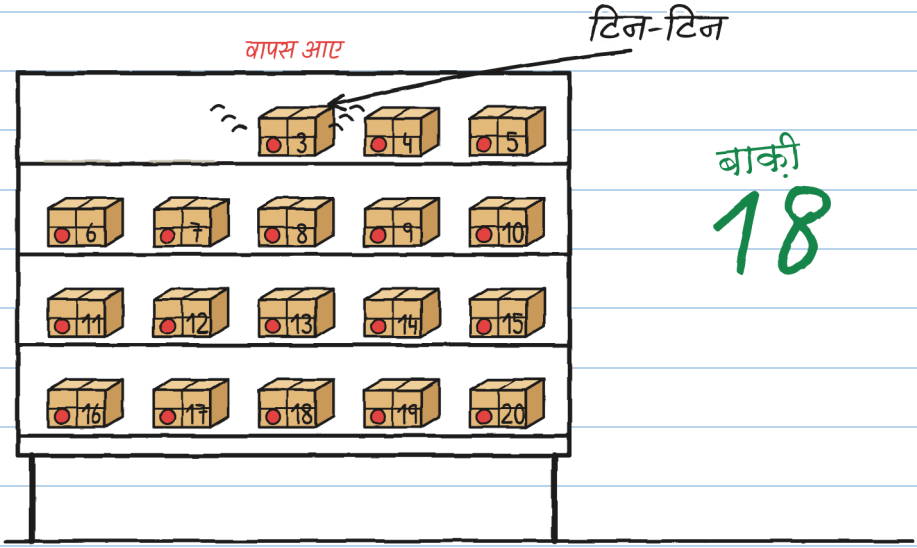
मैंने अपना प्लान ठीक कर लिया। गरज के लिए:

1. हाथी गिनना।
2. किसी के साथ।
3. हिच आ जाए, तो कुछ नहीं होता।

बाक़ी



और यह मत कहना कि तुम किसी चीज़ के शिकारी हो। –ज.

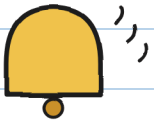


उस रात, घर जाने से पहले, एक वापस आया पार्सल बज उठा: टिन-टिन। किसी घंटी की तरह। नं. 3।

लेबल पर लिखा था:

नं. 3

टोन्यू के लिए

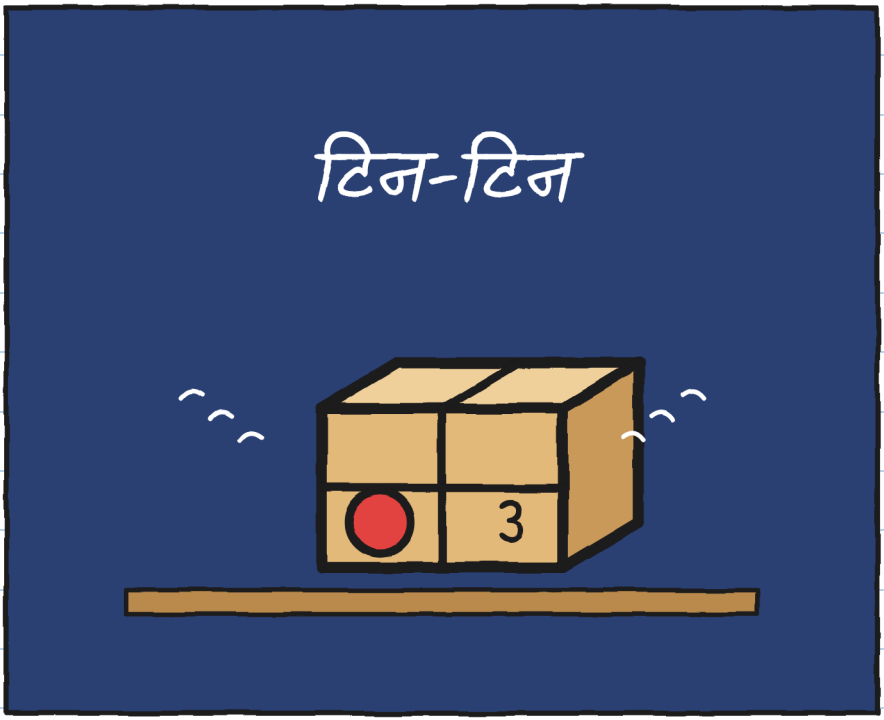


टोन्यो अपने हेलमेट के रंग जैसा लाल हो गया।



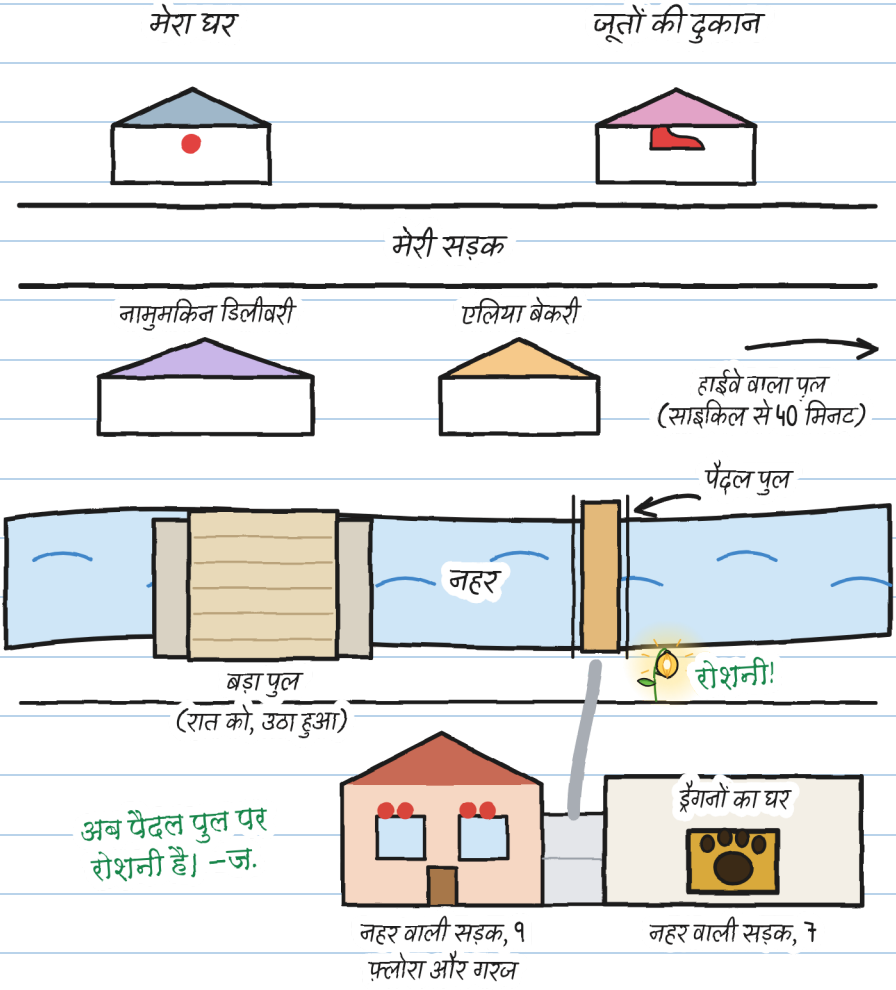
नामुमकिन डिलीवरी · 3

(बहुत जल्द)



टोनूयो को पार्सल कौन भेज रहा है? –ज.

मोहल्ला (वर्शन 2)


मेरा घर
जूतों की दुकान
मेरी सड़क
नामुमकिन डिलीवरी
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल से 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात को, उठा हुआ)
अब पैदल पुल पर रोशनी है। –ज.
इंगनों का घर
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरल
नहर वाली सड़क, ३

R. के बारे में मेरे पास एक कार्ड है। सुराग 1 और 2 डायरी नंबर 1 के हैं। नए मैंने लिख लिए:

R. के बारे में हम क्या जानते हैं



R.

1. बहुत ख़राब लिखावट (मारा)।
2. R. का पहला अक्षर पढ़कर वेरा का रंग उड़ गया।
3. बहुत पहले फ़्लोरा के साथ कंदील लगाना।
4. देर से सही, वादा पूरा होता है।
5. फ़्लोरा के जादुई शीशे बनाना।

6. कोई उसका नाम नहीं लेता। यह भी एक सुराग है। –ज.

और तुम? तुम्हें क्या लगता है R. कौन है?

मुझे लगता है R. है...

एक कहानी, छह साइज़

इसके छह साइज़ हैं, 3 से 16 साल तक, और 20 से ज़्यादा भाषाएँ। XXS, XS, S, M और L में वही पन्ने और वही चित्र हैं। XL एक उपन्यास है। बदलता बस इतना है कि कहानी कैसे सुनाई जाती है।

साइज़ XXS · PRE-A1
लूलिता सातवाँ बीज पकड़ लेती है।

साइज़ XS · A1
फ़र्श पर एक बीज बचा था। लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ S · A2
फिर बिजली चमकी: फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था। लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ M · B1
अगली चमक में सिर्फ़ एक बीज बचा था, और लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ L · B2
जब बिजली फिर चमकी, तो फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था, और लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ XL · B2–C1
सचित्र उपन्यास · 13+
CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं।

हर कोई अपने साइज़ में। तूफ़ान वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

असली तूफ़ान: क्या करना चाहिए

1. अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो, तो घर के अंदर आ जाओ: बिजली तुम तक पहुँच सकती है।
2. अंदर रहो, किसी बड़े के साथ, खिड़कियों, दरवाज़ों और काँच से दूर। ग्रीनहाउस, पुल, पेड़ या पानी के पास बिल्कुल नहीं।
3. आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद तक बाहर मत निकलो।
4. हाथी गिनने से पता चलता है कि बिजली पास गिरी या दूर, और मन शांत होता है। इससे यह पता नहीं चलता कि बाहर कब निकलना है।

अपना तूफ़ान गिनो

घर के अंदर से: बिजली की चमक और गरज के बीच हाथी गिनो।

चमक	हाथी	किलोमीटर (लगभग हर 3 हाथी पर 1)	वह बिजली: क्या और पास या और दूर?
1	15	5	—
2	१	3	और पास